चन्दामामा
मई १९६२

डाबर
(डा. एस. के. बर्मन) प्राइवेट लि० कलकत्ता
लालशर
(डाबर-बालामृत)
कैल्सियम
सोडियम
जिंजर या अदरक
व
डिल या मधुरिका
का
स्निग्ध-सार
आदि पदार्थ
इस मीठी
'पुष्टई' में
बच्चों को
सुलभ हैं
खेलने-खाने की
उम्र है इनकी,
ये ही तो परिवार
और राष्ट्र के भावी
कर्णधार हैं।
इनके स्वास्थ्य और
शक्ति के लिये
डाबर का
उत्तम
बालामृत

चन्दामामा

मई १९६३

आप अपनी
त्वचा को चमकाइये।

सौन्दर्य सहायक:

कोल्ड क्रीम, स्नो,
पावडर, हेयर आइल,
साबून और ब्रीलियेन्टिन
एवं पोमेड इत्यादि।

सोल डिस्ट्रिब्यूटर्स:
ए. व्ही. आर. ए. एंड कं०., बम्बई २ - कलकत्ता १ - मद्रास १

RA9

LIFEBUOY
SOAP
लाइफ़बॉय
है जहाँ
तंदुरुस्ती है वहाँ !
हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन
L. 38-77 (8)

मई १९६३

"चन्दामामा" के लगातार ४ साल अध्ययनोपरान्त मैं ने यह अनुभव किया है कि "चन्दामामा" एक मासिक पत्रिका ही नहीं बल्कि हम बालकों लिये पथ प्रदर्शक एवं मनोरंजन का एक मात्र साधन भी है! इतना ही नहीं यह भारतीय मानवता की एक अच्छी थोतक पत्रिका भी है। इन सब का प्रत्यक्ष प्रमाण इसकी बढ़ती हुई माँग है!

साथ ही मैं ये शुभ कामना करता हूँ कि जासूसी एवं पथ-भ्रष्ट उपन्यासों के स्थान पर हम बालकों के बिबयों में "चन्दामामा" पत्रिका हों।

श्रु. च. शंकर मिश्र, इलाहाबाद

मैं "चन्दामामा" विगत ३ वर्ष से पढ़ रही हूँ। मुझे आपकी "गुलाम लड़की", "वरदान" और "बावला" बड़ी प्रिय लगीं और विशेषकर तो मुझे बेताल कथाएँ अच्छी लगीं हैं। यदि आप "चन्दामामा" को साप्ताहिक पत्रिका बना दें तो कितना अच्छा रहे। आप यदि "महाभारत" जैसे और कथाओं के अक्षर भी छोटे करते तो एक या दो कथाएँ और आ सकती हैं। आप से यही आशा करता हूँ।

रमेशचन्द्र आहुजा, बरेली

चन्दामामा मासिक पत्र को सासाहिक पत्र निकाले तो अच्छा होगा। चन्दामामा के आने की घर में बड़ी ही प्रतीक्षा रहती है।

कुमारी गीता मेनन, मुकेश्वर

मैं "चन्दामामा" पिछले ३ साल से पढ़ता आ रहा हूँ। चाहे जो हो मुझे धारावाहिक "भयंकर घाटी", "गुलाम लड़की" व रामायण का "अरण्य काण्ड" कथायें बहुत ही प्रिय लगती हैं।

यदि आप इश्तेहारों से पन्नों को न फँसा कर हास-परिहास के पुराने चुटकले दें तो बहुत ही अच्छा होगा। अगर आप संसार के आश्चर्य के स्थान पर "संसार के आठ महान आश्चर्यों" का सविस्तार वर्णन करें तो अच्छा रहेगा।

सुरेन्द्रनाथ रस्तोगी, वाराणासी

जब घर में चन्दामामा आता है। तो मैं उसको आधे घण्टे में पढ़ डालता हूँ। और फिर पुरा एक महीना चन्दामामा का इन्तजार करना पड़ता है वह एक महीना हमारे से गुजरता नहीं है। इसलिये मैं कहता हूँ कि आप चन्दामामा को साप्ताहिक कर देंतो आप की अति कृपा होगा।

कैलाश चन्द्र शास्त्री, नये दिल्ली

मैं आपकी मासिक पत्रिका, 'चन्दामामा' काफी कई सालों से पढ़ती आ रही हूँ। मुझे व मेरे पूरे परिवार को यह पत्रिका बहुत पसन्द है। हम इसके अलावा कोई पत्रिका नहीं लेते हैं। इसकी सरल व शिक्षाप्रद कहानियाँ सब का मनमोह लेती हैं।

कु. कान्ता यादव, अजमेर

मैं पाँच साल से चन्दामामा पढ़ता आ रहा हूँ। यद्यपि यह बाल-पत्रिका है तथापि यह मुझे बहुत भाती है। सत्य ही, चन्दामामा जिस तरह सारे जग को शीतलता रूपी चाँदनी की बनी चादर में ढँक देता है और जग परम शीतलता का अनुभव करता हुआ हँस देता है, उसी तरह यह "चन्दामामा" भी कहानी रूपी चादर से सारे जग को शीतलता डुबो देता है।

फरवरी माह में निकले हुए "तोता बुद्धि", 'वर-दान' तथा "बावला" मुझे बहुत भाये।

सुजितकुमारबोस, मुजफ्फरपुर

रोज़ पहनने के कपड़े...

चन्दामामा

संचालक : चक्रपाणी

अब गरमियाँ शुरु हो गई हैं। शिक्षणालयों व शिक्षा संस्थाओं में ग्रीष्मावकाश शुरु हो गया होगा।

कई पाठकों ने लिखा है कि कम से कम अवकाश के दिनों में "चन्दामामा" को पाक्षिक रूप से प्रकाशित किया जाये तो अच्छा हो।

कई और का सुझाव है कि इसको साप्ताहिक बनाया जाय। कई का कहना है कि "चन्दामामा" के साथ साथ और भी पत्रिकायें निकलनी चाहिए।

किन्तु परिस्थितियाँ इस समय इतनी विकट हैं कि यह सब सम्भव नहीं मालूम होता, यद्यपि हम अपने पाठकों की भरसक सेवा करना चाहते हैं।

वर्षः १४ मई १९६३ अंकः ५

भारत का इतिहास

इल्तमश का बड़ा लड़का नासिरुद्दीन १२२९ में ही गुज़र गया। जब इल्तमश जीवित ही था। नासिरुद्दीन बंगाल में राज प्रतिनिधि था। उसके लड़कों में और कोई राज्य करने योग्य न था। इसलिए, इल्तमश अपनी लड़की रज़िया को राज्य की उत्तराधिकारिणी नियुक्त करके मर गया। परन्तु सुल्तान के नौकरों को एक स्त्री के सामने सिर झुकाना अपमानजनक लगा। उन्होंने सुल्तान की इच्छा का तिरस्कार करके उसके दूसरे लड़के रुकनुद्दीन फिरोज़ को गद्दी पर बिठाया।

रुकनुद्दीन नालायक था। व्यसन भोगों का विलासी था। उसने शासन को शिथिल कर के खज़ाना खाली कर दिया। अपने लड़के की अयोग्यता का बहाना करके उसकी माँ शाहतुर्कान ने अधिकार अपने हाथ में ले लिया। वह पहिले दासी थी। माता पुत्र के कारण सारे राज्य में अराजकता फैल गई। देश में केन्द्रीय सरकार की उपेक्षा होने लगी। आखिर दिल्ली के बड़े लोगों ने सुल्तान और उसकी माँ को जेल में डाल दिया। १२३६ में रुकनुद्दीन जेल में ही मर गया।

रज़िया दिल्ली की गद्दी पर बैठी। परन्तु उसका खासा विरोध हुआ। इन विरोधियों का सरदार मोहम्मद जुनैदी था। परन्तु रज़िया योग्य थी। राजनैतिक दाँव पेंच से उसने अपने विरोधियों को शान्त किया। राज्य में भी उसके शासन को समर्थन मिला। उसके गद्दी पर बैठते ही किरामिता और मुलाहिदा पंथों ने नुरुद्दीन के नेतृत्व में अराजकता शुरु करदी थी।

हज़ार आदमी तलवार लेकर एक निश्चित दिन दिल्ली की बड़ी मस्जिद में घुस गये। परन्तु जब राज-सैनिकों ने इनको पीछे हटा दिया तो उनका यह प्रयत्न हास्यास्पद-सा लगा।

फिर भी, रज़िया शान्तिपूर्वक शासन न कर सकी। अबीसीनिया का गुलाम, जमालुद्दीन याकूत, रज़िया की कृपा का पात्र बना। उसने उसको अश्वशाला का अधिपति नियुक्त किया। यह देख तुर्की अमीर उबल पड़े। उन्होंने इसका विरोध किया। पहिले पहल सरहिन्द का गवर्नर, इख्तियारुद्दीन अल्तूनिया ने रज़िया सुल्तान के विरुद्ध बगावत की। इसको ऊँचे ऊँचे राजकर्मचारियों का समर्थन भी मिला।

इस बगावत का मुकाबला करने रज़िया एक बड़ी सेना के साथ निकली। दोनों में युद्ध हुआ। जमालुद्दीन याकूत मारा गया। रज़िया विरोधियों द्वारा पकड़ी गई। वह अल्तूनिया के आधीन रखी गई। उसका भाई मुइज़ुद्दीन बहराम, दिल्ली का सुल्तान बना।

इन कठिन परिस्थितियों में से निकलने के लिए, रज़िया ने अल्तूनिया से शादी कर ली और उसे अपनी तरफ़ कर लिया।

वह अपने पति और उसके अनुचरों को लेकर, दिल्ली पर आक्रमण करने निकली। पर जब वह कैथल के पास पहुँची तो अल्तूनिया की तरफ़वाले विश्वासघात करके, भग निकले। १२४०, १३ अक्तूबर को मुइज़ुद्दीन बहराम ने रज़िया को युद्ध में हरा दिया। अगले दिन रज़िया और उसके पति को मार दिया गया। रज़िया का शासन तीन साल और कुछ महीनों तक ही चला।

रज़िया प्रतिभाशाली थी। पिता जब जीवित थे, तभी राजकीय दक्षता पा

ली थी। सिंहासन पर बैठने के बाद, उसकी काबलियत और भी अधिक हो गई। शत्रुओं पर जब आक्रमण करने वह निकलती, तो शुरु में वह होती, वह स्त्री की पोशाक छोड़कर पुरुष वस्त्र पहिनती। वह पगड़ी पहिनकर, दरबार में सबके समक्ष अपना शासन कार्य करती। तुर्की सामन्तों ने एक स्त्री के सामने झुककर रहना अपमानपूर्ण समझकर, उसको स्वयं गद्दी से उतरवा दिया।

रजिया के बाद, मुइजुद्दीन बहराम और अलाउद्दीन मसूद असमर्थ थे। उनके छः वर्षों के शासन में न शान्ति रही, न सुख ही और इसके साथ विदेशियों ने भी हमला करना शुरु किया। १२४१ में मंगोल पंजाब में आ घुसे और उन्होंने लाहौर नगर को लूटा। १२४५ में वे उच्छ तक आये। उनको पीछे हटाने में बड़ा नुकसान हुआ। मसूद शा के शासन में तो अराजकता चरम सीमा तक पहुँच गई। १२४६ जून १० दिल्ली के अमीर, मालिकों ने मिलकर, इल्तुमश के सब से छोटे लड़के नासीरुद्दीन मोहम्मद को सिंहासन पर बिठाया।

नासिरुद्दीन बड़ा सीधा था। राजकीय क्लिष्ट परिस्थितियों का मुकाबला करने की शक्ति उसमें न थी। पर उसका एक मन्त्री था जिसका नाम गियासुद्दीन बल्बन था। वह राजनीति में दक्ष था। इसने आन्तरिक कलहों का परिष्कार किया। फिर मंगोलों के आक्रमण को भी रोका। १२६६, १८, फरवरी के दिन, जब नासिरुद्दीन मरा, तो उसके साथ इल्तुमश के वंश का अन्त भी हो गया।

लेकिन बोलो, दुखिया माँ का
दुख भारी कब दूर करोगे,
आस लगाये बैठी तुम पर
कब आशा तुम पूर्ण करोगे !

दासी बनी सौत की वह तो
कब दुख है झेल रही,
नरकयातना ही मानो वह
कद्रू के घर भोग रही।

जाओ, यत्न करो, अब माँ को
सुखी करो भरपूर,
बेटा क्या वह, कर न सके जो
माँ का ही दुख दूर !

तेजस्वी हो, बल पाया है
तुमने पुत्र, अपार,
अगर न माँ ही सुखी तुम्हारी
तो सब कुछ बेकार !"

कश्यपजी की बातें सुनकर
गरुड़ रह गया दंग,
माँ के दुख की कथा जानकर
सिहरा उसका अंग।

पूछा उसने—"लेकिन आखिर
क्या था कारण मूल,
जिससे आयी माँ पर विपदा
कैसी थी वह भूल !"

"भूल नहीं विनता की बेटे
यह तो भोली-भाली,
छल से हरा उसे कद्रू ने
दिल की कसर निकाली।

लेकिन तुमको अभी नहीं है
केवल क्रोध दिखाना,
माँ को दासी-जीवन
से है मुक्त कराना।

माँ का दूर करोगे दुख तो
सच्चे पुत्र कहाओगे,
अमर रहेगी कीर्ति तुम्हारी
जीवन सफल बनाओगे।"

कहा गरुड़ ने, "नहीं अभी तक
था मुझको कुछ ज्ञात,
दासी बनकर जीती है माँ
नहीं जानता था यह बात।

जब तक माता दुःख सहेगी
होगी अधिक अशांत,
तब तक मैं विश्राम न लूँगा
रह न सकूँगा शांत।

करो युद्ध, ऐसा ही तुम अब
करें सफल भगवान!"
इतना कहकर नारदजी तब
हुए झट अंतर्धान।

गरुड़ सोचता लौटा घर को
पहले माँ के पास गया,
और पैर छू माँ फिर वह
कद्रू के ही पास गया।

गद्दे पर बैठी थी कद्रू
देख गरुड़ को बोली तत्क्षण,
"कहो चाहिए क्या तुमको जो
आये हो सीधे यों इस क्षण?"

कहा गरुड़ ने, "मेरी माता
नहीं रहेगी दासी अब
कहो तुरत क्या देने पर तुम
माँ को मुक्त करोगी अब?"

कद्रू बोली व्यंग्य-हँसी हँस—
"ओह, बात है ऐसी!
अच्छा तो ले आओ अमृत
देखूँ हिम्मत कैसी!"

इसपर बोला गरुड़ कि "अमृत
लाने मैं तो जाता हूँ,
माँ को छुड़ा अभी मैं अपना
जीवन सफल बनाता हूँ!

[२२]

[केशव और उसके साथियों को केशव का बूढ़ा पिता और उसके साथ का जंगली युवक दिखाई तो दिया, पर जब नरभक्षकों के साथ युद्ध हुआ, तो फिर सब इधर उधर भाग गये। भागते भागते केशव और उसके साथी एक पहाड़ की चोटी पर पहुँचे। वहाँ उन्होंने एक महात्मा को एक भयंकर पशु से लड़ते देखा। अन्त में]

केशव और जयमल्ल गुफा के छेद में से बाहर देख रहे थे और जंगली युवक गुफा के अन्धेरे में देख रहा था। उसको एक कोने में कुछ धनुष दिखाई दिये। उसे बड़ा हौसला हुआ। एक धनुष लेकर उस पर तागा चढ़ाकर, तरकश बगल में रख, वह केशव और जयमल्ल के पास भागा भागा गया।

जयमल्ल ने जंगली युवक की ओर आश्चर्य से देखते हुए पूछा—"गोमान्न, ये सब कहाँ मिले? क्यों बाण चढ़ा रहे हो.... क्या तुम बाण से भयंकर पशु को मारना चाहते हो?"

गोमान्न ने हाँ कहते हुए सिर हिलाया। वह बाण छोड़ने वाला था कि केशव ने पीछे मुड़कर उसका हाथ पकड़ लिया—

"तुम बड़ा खतरनाक काम करने जा रहे हो। तुम्हारे बाण से तो ये दोनों मरेंगे नहीं, बल्कि दोनों ही हमारी ओर लपकेंगे। क्यों तुम उनको गुस्सा दिलाते हो! यह बताओ ये धनुष बाण तुमको मिले कहाँ!"

जंगली युवक ने गुफा में एक कोने की ओर इशारा किया। केशव वहाँ भागा भागा गया—हाथ में कुछ धनुष बाण लेकर उसने कहा—"हमें इस समय इन चीज़ों की बड़ी सख्त ज़रूरत है। सिवाय तलवारों के हम सब खो चुके हैं। चलो, अब गुफा से बाहर निकलें।"

"ये बाण वगैरह शायद यहाँ पड़े दो कंकालों के रहे होंगे। ये दोनों यहाँ क्यों आये! और कैसे मारे गये!" जयमल ने कहा।

"इन प्रश्नों का उत्तर मिलने से पहिले सम्भव है कि हम भी उनसे आ मिलें और हमारे बाद आनेवाले, हमारे कंकालों को देखकर, शायद ऐसे ही प्रश्न करेंगे।" केशव ने खिझकर कहा।

जयमल कुछ कहने ही वाला था कि गुफा के पिछले भाग में भयंकर पशु और महासर्प तूफान की तरह आ पड़े। उनके आने से सारी गुफा काँप उठी। केशव ज़मीन पर औंधे गिर गया। गुफा का मध्य भाग टूट-सा पड़ा। पत्थर वगैरह उसमें आ लुढ़के। केशव और उसके मित्र भी उसी गढ़े में आ गिरे।

तीनों को चोट लगी। पत्थरों के कारण सारे शरीर पर ज़ख्म लग गया। परन्तु उनके तलवार, धनुष, बाण भी उनके साथ गढ़े में गिर गये।

तीनों शरीर झाड़ते हुए उठे। खतरा चाहे कुछ भी हो, गनीमत थी कि उनके हाथ पैर नहीं टूटे थे।

"हम बड़ी किस्मतवाले हैं।" केशव ने कहा।

"इसमें क्या सन्देह है! परन्तु इस अन्धेरी घाटी में से कैसे बाहर निकल जायें! यही तो अब हमारे सामने समस्या है।" जयमल ने कहा।

गोमान्त गढ़े में घुटनों के बल कुछ दूर रेंगता गया। फिर एक तरफ मुड़कर उसने कहा—"केशव और जयमल, हम पर कोई खतरा नहीं है। हम पहाड़ की गुफाओं में फंस गये हैं। परन्तु यहाँ से थोड़ी थोड़ी रोशनी आ रही है। हम सुरक्षित यहाँ से बाहर निकल सकते हैं। आओ, चलें, चलें।"

गोमान्त की बातें सुनकर केशव और जयमल जल्दी-जल्दी उसके पास भाग कर गये। उनको कुछ दूरी पर गुफा में प्रकाश दिखाई दिया। पर वे न जान सके कि यह प्रकाश कहाँ से आ रहा था।

"अच्छा तो हम अब चलें। यहाँ जिधर देखो उधर गुफा में रास्ते दिखाई दे रहे हैं। किस रास्ते से जाकर हम बाहर निकल सकेंगे, यह नहीं मालूम हो रहा है।" जयमल ने कहा।

केशव ने चुपचाप रास्ता दिखाया। वह अपने पिता के बारे में तो चिन्तित था ही अब वह अपने विषय में भी चिन्तित हो उठा। उसे ऐसा लगा कि यहीं गुफाओं की एक भुलय्या में फंसा-फंसाकर कहीं वह और उसके साथी मर मरा न जायें। कुछ दूर जाने के बाद रास्ता दो तीन तरफ फटा। हमें किस रास्ते जाना होगा! वह इस दुविधा में था कि जयमल ने उसकी कठिनाई का अनुमान करके कहा—"केशव सोचने को क्या रखा है! नाक के सीधे चले चलो। जब तक यह थोड़ी

बहुत रोशनी है, हमें निराश होने की क्या जरूरत है?"

जयमल्ल अभी बोल ही रहा था कि गुफा के बायें भाग की ओर से एक अजीब ध्वनि सुनाई दी। फिर ऐसी ध्वनि सुनाई दी, मानों कोई बड़ा पक्षी पंख फड़फड़ा रहा हो।

केशव ने तलवार निकाली और रास्ते के मोड़ पर स्तब्ध-सा खड़ा हो गया। उसके पीछे आते जयमल्ल के आश्चर्य की सीमा न थी। गोमान्ना ज़ोर से चिल्लाया "भूत" जयमल्ल ज़ोर से हँसा। केशव का हाथ तरकश की ओर गया। गोमान्ना ने तब तक धनुष पर बाण चढ़ा लिया था।

गुफा के ऊबड़-खाबड़ रास्ते के पत्थरों के ऊपर एक काली आकृति दिखाई दे रही थी, उस घने अन्धकार में उसके दान्त चम-चमा रहे थे।

"गोमान्ना, यह भूत नहीं है। यह भयंकर चमगादड़ है। बाण तो चढ़ा ही रखा है। ठीक इस तरह निशाना लगाओ कि बाण उसके सिर पर लगे।" जयमल्ल ने कहा।

उसी समय गोमान्ना का छोड़ा हुआ बाण ज़ोर से चमगादड़ के सिर पर लगा। चमगादड़ चीखता, छटपटाता नीचे गिर गया।

गोमान्ना सामने गया और छटपटाते चमगादड़ को बाण से भोंककर कहा—"मैं जंगल में पैदा हुआ और जंगल में ही बड़ा हुआ पर मैंने भी संसार में इतना बड़ा चमगादड़ कहीं नहीं देखा है।"

"सच कहा जाये तो मैंने भी नहीं देखा है। ऐसा लगता है कि हम किसी विचित्र संसार में आ रहे हैं।" जयमल्ल ने कहा।

"शायद यह ही भयंकर घाटी का रास्ता हो।" केशव ने कहा।

"क्या तुम्हें कोई शोर—भेड़ियों के शोर की तरह सुनाई दे रहा है?" गोमान्ना ने पूछा।

केशव और जयमल्ल ने कुछ देर रुककर कहा—"हाँ, कुछ पशुओं का शोर सुनाई पड़ रहा है।"

"तो कोई बात नहीं, फिर तो हम जीते रहेंगे, क्योंकि जहाँ भेड़िये होते हैं, वहाँ शिकार भी होता है। खाने को भी बहुत कुछ होता है।" गोमान्ना ने खुशी खुशी कहा।

"और खाने की बात तो तभी न उठेगी, जब हम गुफा के रास्तों के इस गोरखधन्धे से बाहर निकल पायेंगे।" केशव ने कहा।

"मेरे कान बड़े तेज हैं। मुझे रास्ता निकालने दीजिये, मैं उन भेड़ियों के बीच में ले जाऊँगा।" यह कह कर गोमान्ना कान खड़े करके सावधानी से उस तरफ गया, जिस ओर से भेड़ियों की आवाज आ रही थी। चार पाँच मिनट गुफा में चलने के बाद, उनको एक गुफा की तरफ से चौंधियानेवाला प्रकाश दिखाई दिया। तीनों खुशी से उछले। गुफा के बाहर छोटे छोटे पौधे और कुछ दूरी पर बड़े बड़े पेड़ दिखाई दिये। भेड़ियों का चिल्लाना भी पास सुनाई पड़ने लगा।
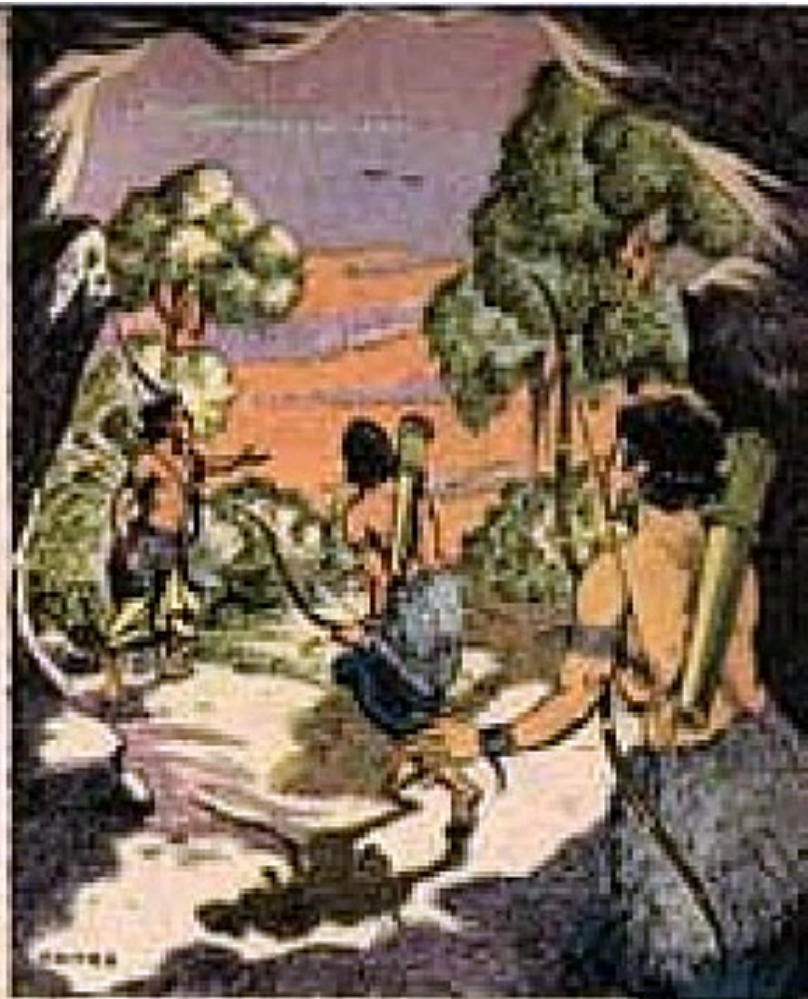
केशव और उसके साथी रोशनीवाली गुफा से बाहर निकले। गुफा की एक तरफ समतल प्रदेश में हरिणों का एक झुन्ड खड़ा था। उनके चारों ओर इधर उधर घूमते चार भेड़िये ज़ोर ज़ोर से चिल्ला रहे थे। जो भेड़िये उनकी तरफ आ रहे

थे, उनकी ओर बड़े बड़े सींगोंवाले हरिण लपक रहे थे।

"मैंने कहीं ऐसे हरिणों को नहीं देखा है, जो भेड़ियों का मुकाबला करते हों।" जयमल्ल ने कहा।

"यह तुम्हारी बदकिस्मत है। मैंने एक भेड़ देखी है, जिसने आत्म रक्षा के लिए भेड़िये को मार दिया था।" गोमान्ना ने कहा।

वे इस तरह बात कर रहे थे कि भेड़ियों की नज़र उन पर पड़ी। उन्होंने झट हरिणों का पीछा छोड़ दिया और दाँत दिखाते उनकी ओर आने लगे। केशव ने एक बाण एक भेड़िये पर छोड़ा। बाण के पेट में लगते ही भेड़िया ज़ोर से चिल्लाया, उछलकर, थोड़ी दूर जा गिरा। बाकी भेड़िये ज़ोर से चिल्लाते, केशव और उसके साथियों की ओर भागने लगे।

गोमान्ना और जयमल्ल ने भी उन पर बाण छोड़े। गोमान्ना के बाण से एक और भेड़िया नीचे गिरा। बाकी दोनों भेड़िये एक क्षण रुके, फिर ज़ोर से चिल्लाते जंगल की ओर भाग गये।

जयमल्ल की बातें सुनकर केशव का उत्साह कुछ बढ़ा। उसने जंगल की ओर देखकर कहा—"हमें पहिले कुछ खाने के लिए ढूँढ़ना होगा। मुझे प्यास भी लग रही है। कहीं कहीं जरूर पानी भी होगा।" कहता वह आगे बढ़ा।

तीनों पहाड़ों के पास आये और चुपचाप जंगल में चलने लगे। तब तक सूर्य पश्चिम में ढलने लगा था। तीनों को भूख सता रही थी। पेड़ों पर कहीं फल हों या शहद का छत्ता हो, यह सोचकर सोमानन्द सिर ऊँचा करके गौर से देखता चल रहा था। यों देखते देखते वह चल रहा था कि उसका एक पैर जमीन में जा घुसा, वह जोर से चिल्लाया। तुरत जयमल्ल ने उसको पीछे खींचा।

जगह सपाट भी फिर सोमानन्द क्यों ऐसे गिर पड़ा था, जैसे कीचड़ में गिर रहा हो, उसको समझ में नहीं आया। केशव ने वहाँ पड़ी इधर उधर की टहनियों और ठूँठ को हटा दिया। वहाँ गड़े खम्भों के बीच में एक रीछ कराह कराह कर छटपटा रहा था।

"यहाँ किसीने मनुष्यों को या पशुओं को पकड़ने के लिए बनाया है। जरा भी और देर होती, आफ़त में फँस जाते।" केशव ने कहा। उसी समय उन पर चारों ओर से पत्थर और ईंटें बाणों की तरह गिरने लगे। केशव और उसके साथी बाण ऊपर करके, जमीन पर लेट गये। उन्होंने चारों ओर घूमकर देखा, पर कहीं कोई मनुष्य नहीं दिखाई दिया। [अभी है]

विचित्र दण्ड

विक्रमार्क ने हठ न छोड़ा। वह पेड़ के पास गया। पेड़ से शव उतारकर, हमेशा की तरह चुपचाप श्मशान की ओर चल पड़ा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा—"राजा, ऐसा मालूम होता है, जैसे, तुम्हें किसी ने सज़ा दी हो। इस संसार में निरपराधियों को भी कभी कभी सज़ा मिलती है। यह दिखाने के लिए, मैं एक छोटी-सी कहानी सुनाता हूँ। सुनो।" उसने यों कहानी सुनानी शुरू की।

एक छोटे गाँव में कन्हैय्या नाम का एक गरीब रहा करता था। उसका दुनियाँ में कोई न था। वह एक धनी के घर में काम करता अपना पेट पाल रहा था। धनी के घर उसके कुछ बन्धु यात्रा करके आये। वे बहुत से पुण्य क्षेत्र देखकर आये थे और जब उन्होंने उनका वर्णन किया, कन्हैय्या

ने बड़ी दिलचस्पी से उनको सुना। जो कुछ उन्होंने वृन्दावन के बारे में कहा था, वह तो उसके मन में खुब-सा गया। वह वृन्दावन जाने के लिए उतावला हो उठा।

परन्तु कन्हैय्या के पास काली कौड़ी भी न थी। कन्हैय्या का मालिक, यदि चाहता, तो कितनी ही बाधायें कर सकता था। परन्तु वह उसके साथ कहीं नहीं जाना चाहता था। कन्हैय्या बिना किसी से कहे वृन्दावन की ओर चल पड़ा। यदि यात्रा आराम से न हुई तो क्या हो गया, उसने सोचा। रास्ते में धर्मशालायें भी हैं, सोने के लिए जगह, पेट भरने के लिए रूखी सूखी रोटी, हर जगह मिल ही जायेगी और फायदा यह है कि पास धन न हो तो चोरों का भय भी नहीं है।

कुछ दिन यात्रा करने के बाद कन्हैय्या एक दिन रात को, एक सराय में सो गया। उस दिन, उस सराय में यात्री न थे। अगले दिन सवेरे कन्हैय्या, निकल ही रहा था कि धर्मशाला के मालिक ने उसको बुलाकर पूछा—"क्यों भाई, अपनी थैली छोड़कर क्यों जा रहे हो! यदि इतने लापरवाह रहे तो कैसे काम चलेगा!" उसने उसके हाथ में थैला देते हुए कहा—"अब जाओ, मुझे कुछ और काम है।" वह यह कहकर चला गया।

बहुत देर तक कन्हैय्या को कुछ समझ में न आया। उसने सोचा कि धर्मशाला के मालिक ने उस पर तरस खाकर रास्ते में कुछ खाने के लिए बाँधकर दिया होगा। परन्तु जब उसने थैला खोला, तो उसमें बहुत-सा धन और एक जोड़ी नये कपड़े भी थे। किसी और की थैली को उसकी जान शायद धर्मशाला के मालिक ने उसे दी थी। जब उसने उसे लौटानी चाही, तो

सराय का मालिक, लाला श्यामरथ कहीं चला गया था, और यदि वह कुछ न निकल पड़ता, तो अगले पड़ाव पर, समय पर नहीं पहुँचता।

"यह थैलीवाला कहीं मिलेगा, और वह अपनी थैली को पहिचानेगा, तो उसको यह थैली दे दूँगा।" सोचकर कन्हैय्या आगे बढ़ा। सौभाग्य से उस दिन शाम को यात्रियों का एक झुण्ड दिखाई दिया। उनमें से कुछ वृन्दावन ही जा रहे थे। कन्हैय्या भी उनमें शामिल हो गया। वह यह सोच बड़ा खुश हुआ कि अब उसकी यात्रा भी आराम से हो जायेगी।

यात्रियों के कुछ दूर जाने के बाद एक नदी मिली। नदी को पार करने के लिए घाट पर नाव थी। यात्री जब नदी पार करके उतर रहे थे, तो यात्रियों ने नाववाले को एक एक पैसा दिया। कन्हैय्या ने कुछ न दिया। जब नाववाले ने माँगा, तो उसने कहा कि उसके पास काली कौड़ी भी न थी। परन्तु यात्रियों ने उससे कहा—"तुम्हारी थैली में तो इतना पैसा खनखना रहा है और तुम कह रहे हो कि पैसा नहीं है।"

एक ने कन्हैय्या की थैली ले ली और खोलकर कहा—"इसमें पैसे ही नहीं, अच्छे कपड़े भी हैं।—ये चीथड़े पहिन कर कह रहा है कि कपड़े खरीदने के लिए पैसा नहीं है। बड़ा कंजूस मालूम होता है।"

कई और नेक आदमियों ने कहा कि कन्हैय्या, चोरों के डर से अपने को गरीब बता रहा था। "हम जब इतने सारे हैं, तो चोर क्या कर सकते हैं!" कन्हैय्या कुछ न कह पाया। वह अच्छे कपड़े पहिनकर, औरों की तरह रुपया खर्चता यात्रा करने लगा।

उसको यह ख्याल आता रहा कि थैलीवाला कभी उसको दिखाई देगा।

कन्हैय्या की तीर्थ यात्रा आराम से कटी। जब तक थैली में धन रहा, उसको जो खर्च करना था, उसने खर्च किया। वृन्दावन में, जो स्थल वह देखना चाहता था, उसने देखे और देखकर बहुत ही सन्तुष्ट हुआ। जिस काम पर वह आया था, उसके पूरा होने पर वह अपने गाँव की ओर निकल पड़ा।

कन्हैय्या जब वापिसी रास्ते में उस धर्मशाला के पास गया तो एक आदमी ने, उसके हाथ में थैली देख कर कहा—"यही मेरी थैली है। मेरे कपड़े भी तुमने पहिन रखे हैं। बताओ, मेरा रुपया सब क्या किया!"

थैली में रखा रुपया पहिले ही खर्च हो चुका था। जब कन्हैय्या ने कहना चाहा कि उसके पास यह थैली कैसे आई थी, तो उस आदमी ने उसे कहने न दिया।

"मैं कुछ नहीं सुनना चाहता। मेरे दो सौ रुपये मुझे दे दो। नहीं तो न्यायाधिकारी के पास चलो।"

कन्हैय्या को, न्यायाधिकारी के पास जाना पड़ा। उस व्यक्ति ने, जो अपना थैली खो बैठा था, कहा कि फलाना धर्मशाला में वह अपनी थैली भूल गया था' जब मैं उसे लेने पहुँचा तो किसी ने वह थैली ले ली और छिपाने की थी अब वह आदमी मुझे मिला है। कन्हैय्या ने कहा कि उसको थैली मिली थी और थैली के धन को उसने खर्च कर दिया था।

न्यायाधिकारी ने दोनों का कहना सुनकर कहा—"क्यों कि तुम कह रहे हो कि इसका धन तुमने अपनी यात्रा के लिए खर्चा है, इसलिये उसको
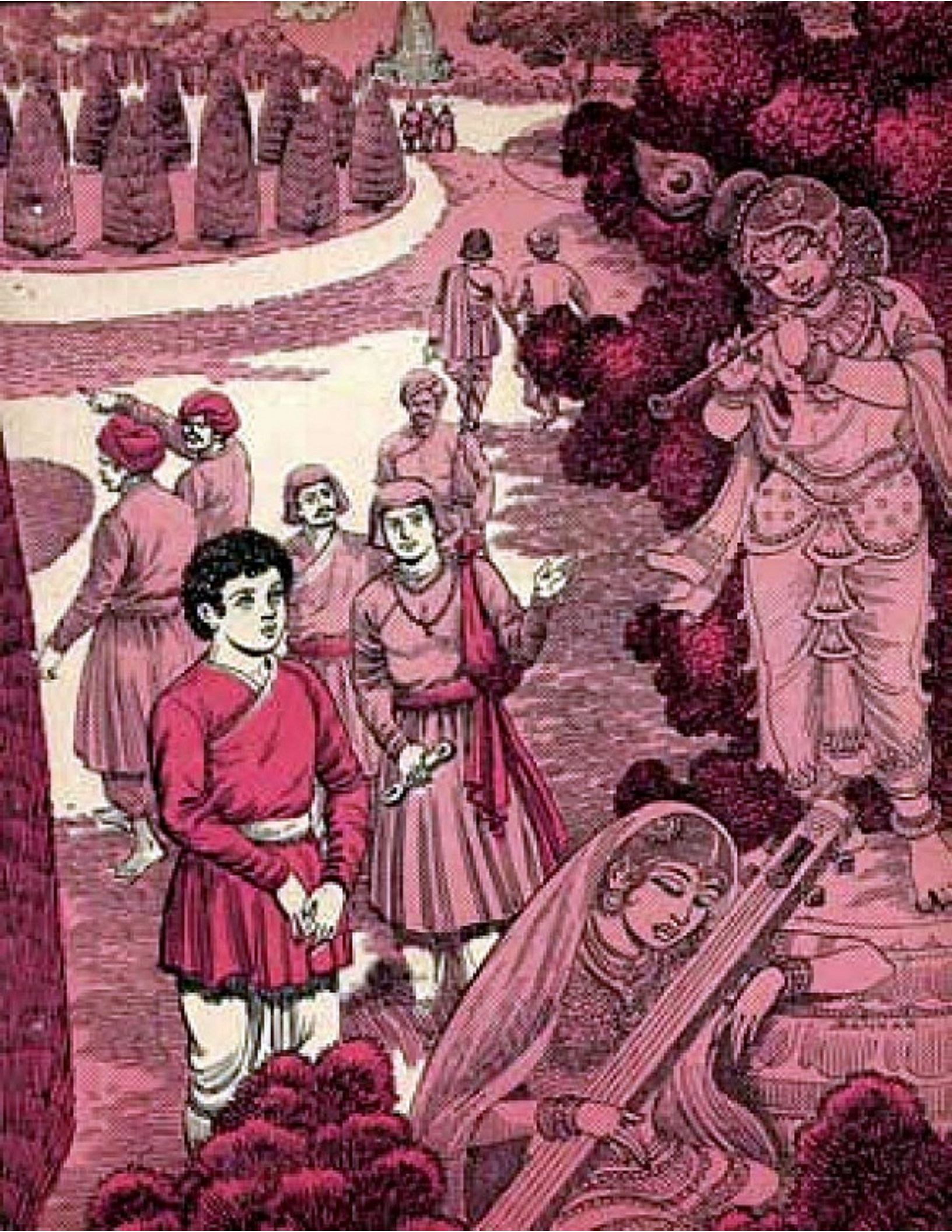
चुकाना तुम्हारा फ़र्ज़ है। तुम बड़े गरीब हो। और मेहनत कर के पेट पालते हो, इसलिये दो वर्ष तक इस आदमी के यहाँ तुम नौकर का काम करो। और ये तुम्हें खाने को देंगे। यही सज़ा मैं तुमको देता हूँ।" कन्हैय्या ने दो साल उसके यहाँ काम किया। और इस तरह उसने अपना ऋण चुका दिया।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा। "राजा, कन्हैय्या ने क्या कसूर किया था कि उसको सज़ा भुगतनी पड़ी? यदि उसने कसूर ही किया था, तो क्या उसको तीर्थयात्रा का पुण्य मिला? यदि इन प्रश्नों का जान बूझकर तुमने उत्तर न दिया, तो तुम्हारा सिर टुकड़े टुकड़े हो जायेगा।"

इस पर विक्रमार्क ने कहा— "न्यायाधिकारी के सामने आने से पहिले ही कन्हैय्या ने अपनी यात्रा का फल पा लिया था। जिस आनन्द की आशा से वह वृन्दावन गया था, वह आनन्द उसे मिल गया था। दो वर्ष थैलीवाले के यहाँ काम करना, कन्हैय्या के लिए कोई खास सज़ा न थी। जब से उसने होश सम्भाला था, तब से धनी के घर काम करके भी वह कानी कौड़ी भी नहीं जोड़ पाया था। इसलिए उसकी ज़िन्दगी ही एक सज़ा थी। यदि दो साल उस धनी के यहाँ काम न करता, तो कहीं न कहीं, पेट के लिए उसे काम करना ही पड़ता। इसलिए न्यायाधिकारी ने जो दण्ड उसे दिया था, न वह दण्ड ही था, न उसका कसूर ही कोई था।"

राजा का मौन इस प्रकार भंग होते ही, बेताल शव के साथ अदृश्य हो गया और पेड़ पर जा बैठा। [कल्पित]

गन्धर्व सम्राट की लड़की

[३]

हुसन के यह कहते ही कि सम्राट की लड़की उसके कमरे में पहुँच गई थी,— "बहिन" उसके पास गई। उसके पैरों पर पड़कर कहा—"महारानी, आपके आगमन से हमारा घर पवित्र हो गया है।"

सम्राट की लड़की ने, जो शोक में थी, सिर उठाकर पूछा—"तुम हो! किसी मानव को, अपने राजा की लड़की का यह अपमान करने का मौका क्यों दिया! क्या तुम मेरे पिता की शक्ति नहीं जानते हो! क्या हिम्मत है तुम्हारी! क्या तुम्हारी सहायता के बगैर ही वह सरोवर से मुझे उठाकर ला सकता है!"

हसन की बहिन ने कहा—"देवी, यह युवक मामूली युवक नहीं है। उसका चरित्र बड़ा उज्ज्वल है। उसके मन में कोई दुरुद्देश्य नहीं है। विधि प्रेरित हो, वह आपको अत्यधिक प्रेम करने लगा। ऐसी दशा है। उसके प्रेम को आपको भी नहीं ठुकराना चाहिये। जब उसने आपको पहिली बार देखा, तो वह इतना प्रेम-विह्वल हो उठा कि उसने आपके लिए प्राण तक छोड़ने का निश्चय कर लिया था। आप जैसी सुन्दरियाँ आपके साथ भी और थीं, पर उसने आपको ही अपना मन दिया।"

यह सुनने के बाद, सम्राट की लड़की ने सोचा कि उसकी विमुक्ति न थी, लम्बी आह छोड़ी। हसन की बहिन ने उसको अच्छे कपड़े पहिनाकर, अच्छा भोजन खिलाकर, उसका शोक कम करने की हर तरह से

कोशिश की। आखिर सम्राट की लड़की ने कहा—"शायद पिता से, जन्मस्थल से, विछोह मेरे भाग्य में लिखा है! भाग्य से कैसे बचा जा सकता है!"

सम्राट की लड़की को ढाढ़स दिलाकर, हसन के पास आकर उसकी "बहिन" ने कहा—"तुम अपनी बेगमी का मन अपनी ओर फेर लो। उसका जो कुछ सत्कार करना है, करो। उससे बातचीत करते समय विनयपूर्ण सहृदयता दिखाओ।"

हसन को सम्राट की लड़की के सामने आने पर, उसने उसको सिर से एड़ी तक देखा। उसके सौंदर्य को देखकर, वह कुछ शरमायी। हसन ने उससे कहा—"राजकुमारी, मैं आपका गुलाम-सा हूँ। मैं आपसे कोई ज़ोर-ज़बर्दस्ती नहीं करना चाहता। शास्त्रों के अनुसार आपसे विवाह करना चाहता हूँ। विवाह के बाद हम मेरी जन्मभूमि, बगदाद नगर चलेंगे। आप जितनी दास-दासियाँ चाहेंगी, उतनी नियुक्त करूँगा। वहाँ मेरी माँ भी है। उससे अच्छी माँ, इस दुनियाँ में कोई न होगी। वह आपको अपनी लड़की की तरह देखेगी, वह पाक-शास्त्र में भी बड़ी प्रवीण है। आपको बड़ा अच्छा खाना बनाकर खिलाएगी।"

सम्राट की लड़की ने उसका कोई जवाब न दिया। पर इस बीच ऐसा हुआ जैसे कोई किवाड़ खटखटा रहा हो। क्यों कि किवाड़ खोलने का काम उसका नहीं था, इसलिए, हसन ने किवाड़ खोले। सभी बहिनें आयी थीं। उन सबने शिकार से वापिस आकर हसन में परिवर्तन देखा। हसन ने उनसे सम्राट की लड़की के बारे में कुछ न कहा। पर जो कुछ शिकार वे लाये थे, उसे अन्दर पहुँचा दिया।

बड़ी बहिन ने उसे देख कर पूछा—"क्यों हसन, बड़े मज़े में मालूम होते हो! ज़रूर कोई कारण होगा! क्या कारण है!" हसन ने शर्माकर लजाते हुये छोटी बहिन की ओर इस तरह देखा मानों कह रहा हो—"तुम बताओ!"

"और कुछ नहीं, हमारा हसन आज एक चिड़िया पकड़कर लाया है। उसे ज़रा बहलाकर पकड़ना था।" उसकी छोटी बहिन ने कहा।

"अरे! इस बात पर शर्माने की क्या बात है!" बड़ी बहिन ने पूछा।

"उसको, उस चिड़िया पर न मालूम कितना प्रेम है!" कहकर उसने अपनी बहिनों को जो कुछ गुज़रा था, बता दिया। वे इस प्रकार की लड़की के पास गईं। उसको बधाई देकर उसको हसन से विवाह करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने ही हसन के हाथ में, उसका हाथ रखकर उसका पाणिग्रहण भी करवाया। तब तक वह भी हसन को चाहने लगी थी।

नये दम्पति ने जब चालीस दिन वहीं बिता दिये, तो हसन को एक दिन स्वप्न में अपनी माँ दिखाई दी। उसने हसन को डाँट बताई कि वह उससे क्यों दूर गया था। वह कराहता, चीखें मारता, नीन्द से उठा। न मालूम क्या हुआ है, यह सोचकर बहिनें भागी भागी आईं। हसन की पत्नी को भी उसके दुःख का कारण मालूम न था।

हसन ने जब अपने चलने के बारे में कहा तो छोटी बहिन ने कहा—"अब तुम्हें यहाँ रहने देना ठीक नहीं है। तुम अपनी माँ के पास चले जाओ। पर यह वचन दो कि हर साल हमारे साथ कुछ समय बिताओगे।"
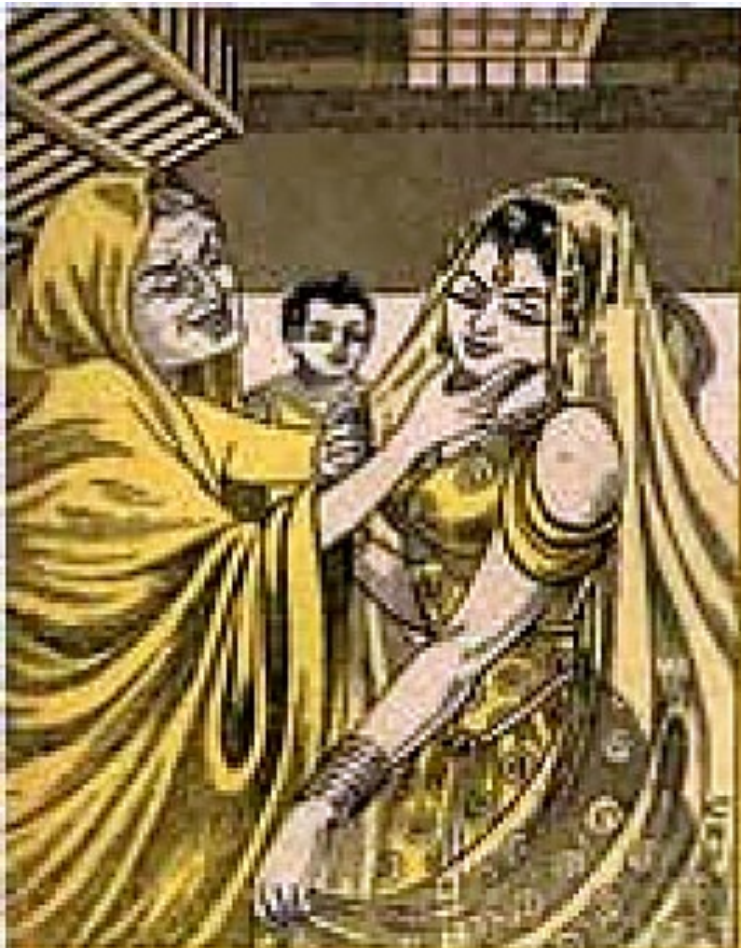
जब यात्रा की तैय्यारियाँ हो गईं तो समस्या उठी कि जाया कैसे जाये ? बेहराम की ढपली का उसे ख्याल आया। उसकी बहिन ने बताया कि वह ढपली कैसे बजानी चाहिये थी। उस ढपली के बजाते ही, ऊँट, घोड़े, खच्चर, उछलते कूदते आ खड़े हुये। उनमें से अच्छों को चुनकर, बाकी को भेज दिया। हसन ने बहिनों से विदा लेकर अपनी पत्नी, बादशाह की लड़की को लेकर, घर की ओर निकला। यात्रा पवन की तरह तेज चली और जल्दी ही खतम हो गई।

हसन बसरा नगर में, अपने घर के सामने उतर ही रहा था कि अन्दर से उसको अपनी माँ का रोना सुनाई दिया। उसने भी रोते रोते घर के किवाड़ खटखटाये। इतने ही में माँ ने आकर किवाड़ खोले। वह अपने लड़के को देखकर, लम्बी आह छोड़ मूर्छित हो गिर गई।

हसन ने अपनी पत्नी के साथ, उसकी सेवा शुश्रूषा की। वह जल्दी ही होश में आ गई। उसने अपनी पत्नी का परिचय अपनी माँ से करवाया। अपनी बहू को देखकर वह बड़ी खुश हुई। यह जानकर कि उसकी बहू गन्धर्व सम्राट की लड़की थी उसकी अक्ल ही मानों जाती रही। वह न सोच सकी कि ऐसी बहू की कैसे आवभगत की जाये।

वह तुरत गई और दुकानों में रखे, कपड़ों में से, अच्छे कपड़े चुनकर, उन सब को बहू पर एक साथ फेंक दिये। फिर उसने अच्छे अच्छे पकवान बनाकर उसको खिलाये।

आखिर, उसने अपने पुत्र से कहा— बेटा, यह बसरा शहर तुम्हारी पत्नी के रहने के लिए किसी काम का नहीं है।

हम यहाँ गरीबों की तरह रहे भी हैं। इसलिए हमें तुरत बग़दाद चले जाना चाहिए और वहाँ अमीरों की तरह वहाँ रहेंगे।"

यह ख्याल हसन को भी जँचा। उसने अपना मकान सब सामान के बेच दिया और ऊँटों की मदद से बग़दाद पहुँच गया। उसने नगर में पहुँचकर, दलालों द्वारा, लाख दीनार देकर, एक बड़ा महल खरीदा। उसमें, उस घर के मुताबिक साज-सामान रखवाये, फिर उसने अपनी पत्नी और माँ के साथ प्रवेश किया। उसने इतने दास दासियों को खरीदा, कि उतनी दास दासियाँ बग़दाद में किसी और के घर में न थीं। उसके वैभव के साथ नौ महीने बग़दाद में कटने के बाद, उसकी पत्नी ने दो जुड़वे लड़कों को जन्म दिया। उनका नासिर, मन्सूर नाम रखा गया।

वर्ष खतम होने के पहिले ही उसको अपनी बहिन को दिया हुआ वचन याद आया। वह यात्रा की तैयारियाँ करने लगा। अपनी बहिनों को जो जो उपहार देना चाहता था, उसने खरीदे। अपनी माँ से, यात्रा के बारे में कहा—"माँ, सब से बड़ी बात यह है। तुम्हारी बहू का पक्षी
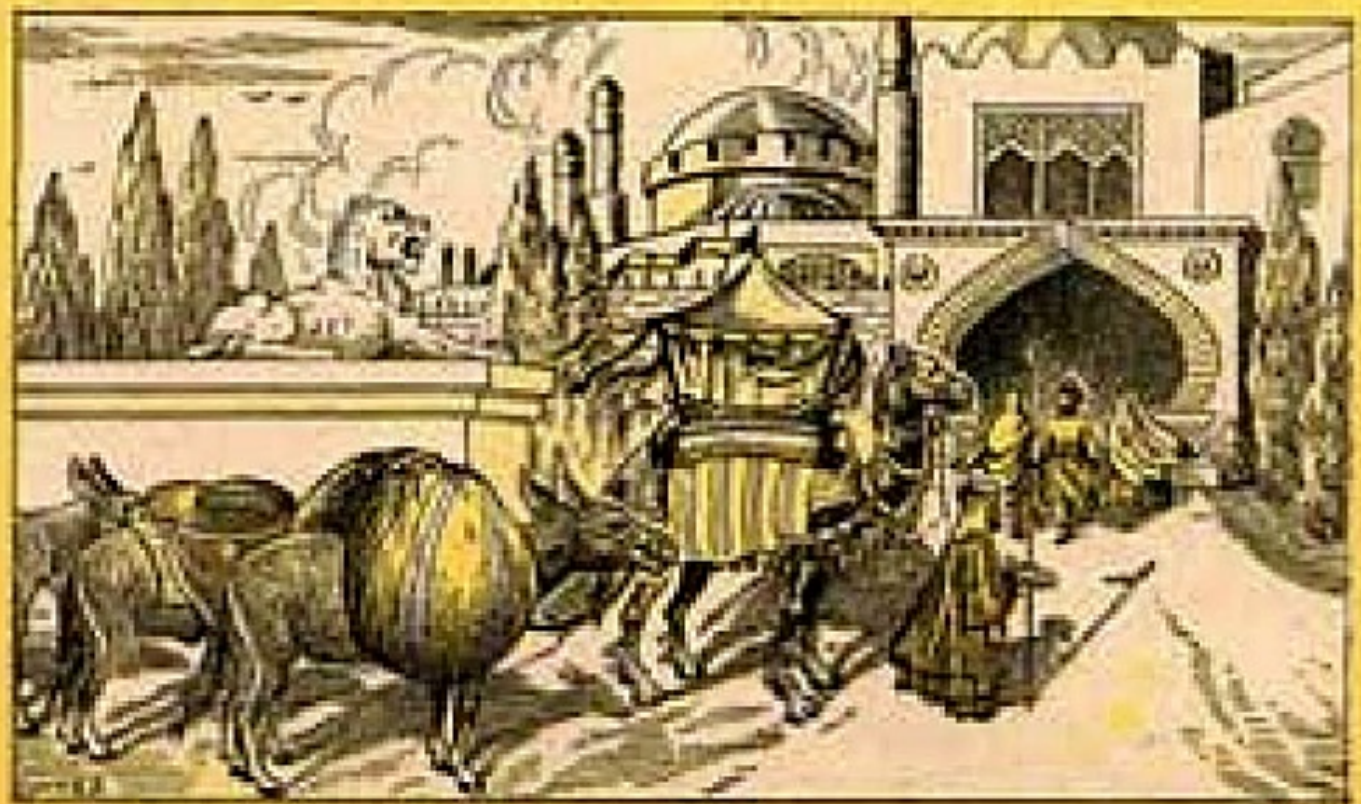
का चोगा मैंने एक जगह छुपा रखा है। मेरे वापिस आने तक उसकी प्राणों की तरह रक्षा करना। तुम्हारी बहू में कुछ पक्षी का स्वभाव है। यदि उसने गलती से भी उसे देख लिया, तो उसे कोई नहीं रोक सकता। उसमें उड़ने की प्रबल इच्छा है। चले जाने के बाद वह घर वापिस नहीं आयेगी। उसके जाने के बाद मैं वियोग के मारे मर जाऊँगा। बाकी चीज़ों के बारे में भी उसका ख्याल करना। वह बड़े लाड़ प्यार से पली है। सेवा शुश्रुषा की आदि है। इन बातों में से कोई एक बात भी न भूलना।"

"इतने कहने की क्या ज़रूरत है? सोच रहे हो कि बुढ़ापे के कारण मेरी अक्ल ही चली गई है। तुम निश्चिन्त हो चले जाओ। जैसे तुम्हारी पत्नी को देखना चाहिए, वैसे ही देखूँगी। बस, मैं एक बात ही पूछती हूँ। जितनी जल्दी हो, उतनी जल्दी वापिस चले आओ।" माँ ने कहा।

परन्तु जो कुछ गुज़रना था ये दोनों नहीं जानते थे। वे यह भी न जानते थे, कि उनकी बात सम्राट की लड़की ने सुन ली थी। हसन अपनी पत्नी और अपने बच्चों को चूमकर चला गया।

उसके जाते ही, गन्धर्व राजकुमारियाँ बड़ी खुश हुईं। छोटी बहिन की खुशी की हद न थी। उसने अपने महल को, फूलों से, रंग-बिरंगी रोशनी से सजाया। हसन ने उससे अपने जुड़वे बच्चों के बारे में कहा। वह अपनी बहिनों के साथ शिकार खेलने गया। उनके साथ उसने बहुत से मनोरंजनों में भाग लिया। (अभी है)

अष्टावक्र

एकपाद नाम का एक ब्राह्मण था, उसकी पत्नी का नाम था सुजाता।

एकपाद के पास कई शिष्य रहते थे। वह उनसे खूब अध्ययन करवाया करता। अहोरात्र अध्ययन करते करते, शिष्य थक थका जाते।

बहुत दिनों बाद सुजाता गर्भवती हुई। एक बार उसके गर्भ के शिशु ने एकपाद से कहा—"क्यों इनसे इतना अध्ययन करवा रहे हो! बिना खाये पीये, और सोये तुम्हारे शिष्य कष्ट उठा रहे हैं।" एकपाद को गुस्सा आ गया। "क्योंकि तुमने अध्ययन के बारे में वक्र बातें की हैं इसलिए तुम आठ वक्रों के साथ पैदा हो।" इस प्रकार उसने पत्नी के गर्भ के शिशु को शाप दिया।

सुजाता का प्रसव का समय आया। घर में एक चीज न थी। तब एकपाद जनक राजा के पास धन माँगने गया, तो वहाँ वरुण का लड़का बन्दी था। वह बन्दी राजसभा में आये हुए लोगों को वादविवाद के लिए आमन्त्रित करता। और जो हार जाते, उनको पानी में डुबवा देता। एकपाद की भी यही हालत हुई। वह हरा दिया गया। और पानी में डुबवा दिया गया।

सुजाता ने अपने भाई उद्दालक के घर, आठ मोड़ों वाले पुत्र को जन्म दिया। उसका नाम अष्टावक्र रखा गया। उद्दालक के भी करीब करीब उसी समय एक लड़का हुआ। उसका नाम श्वेतकेतु था। जब पति घर वापिस न आया, तो

सुजाता अपने लड़के के साथ उद्दालक के घर ही रहने लगी। अष्टावक्र, श्वेतकेतु के साथ पढ़ता रहा।

एक बार अष्टावक्र उद्दालक की गोद में बैठा था। उसी समय श्वेतकेतु आया। “मेरे पिताजी की गोद में बैठने वाला तू कौन होता है? जाओ तो अपने पिता की गोद में बैठो।” उसने ईर्ष्यावश कहा।

यह सुन अष्टावक्र का छोटा-सा मुँह हो गया। माँ के पास जाकर उसने पूछा “माँ, पिताजी कहाँ हैं?” “बेटा, तुम्हारे पैदा होने से पहिले ही धनोपार्जन के लिए वे एक दिन जनक राजा के पास गये। और अभी तक वापिस नहीं आये।” माँ ने अष्टावक्र से कहा।

यह सुनते ही अष्टावक्र अपने पिता को लाने के लिए, जनक राजा के दरबार में गया। वहाँ उसको पता लगा कि उसका पिता बन्दी नामक व्यक्ति से वाद-विवाद में पराजित कर दिया गया था, इसलिए वह पानी में रखवादिया गया था। अष्टावक्र ने राजसभा में जाकर बन्दी को आह्वानित किया। दोनों में विवाद हुआ। बन्दी पराजित हुआ। विजय के पुरस्कार में, अष्टावक्र ने अपने पिता को और अन्य लोगों को, जो बन्दी द्वारा पराजित हुए थे, पानी से निकलवाया।

अष्टावक्र की विवाह की उम्र हो गई। वदान्य नाम के मुनि की, सुप्रभा नाम की लड़की थी। अष्टावक्र ने उससे विवाह करना चाहा। वदान्य के पास जाकर उसने अपनी इच्छा व्यक्त की। वदान्य ने अष्टावक्र के सामने एक परीक्षा रखी। “मुझे अपनी लड़की देने में कोई आपत्ति नहीं है। पर पहिले तुम एक

बार उत्तर हो आओ।" वदान्य मुनि ने कहा।

"कितनी दूर उत्तर हो आऊँ?" अष्टावक्र ने पूछा।

"उत्तर में कुबेर का अलका नगर आयेगा। उसके बाद वह स्थल आयेगा, जहाँ गौरी शंकर विहार किया करते थे। उसके आगे, और उत्तर में जाने पर एक स्त्री दिखाई देगी। उसे देखकर तुम वापिस चले आओ।" वदान्य ने कहा।

अष्टावक्र इसकेलिये मान गया, और उत्तर की ओर चल पड़ा। जब वह कुबेर के नगर में गया, तो स्वयं कुबेर उसका स्वागत करने आया। वह उसको अपने घर ले गया। उसका आतिथ्य किया। वहाँ अष्टावक्र ने रम्भा, ऊर्वशी, तिलोत्तमा का नृत्य गान देखते देखते एक वर्ष पार किया। कुबेर से विदा लेकर हिमालय में चलते हुये वह एक वन में पहुँचा। उस वन में एक सोने का महल, और उसके चारों ओर और भी कई महल थे। अष्टावक्र के महल में प्रवेश करते ही अनेक स्त्रियाँ उसको अन्दर बुलाकर ले गईं। अन्दर से,

अप्सरा-सी एक स्त्री ने आकर उसका आतिथ्य किया। उस दिन रात को अष्टावक्र को मुग्ध करने के लिए उसने बड़ा प्रयत्न किया। परन्तु अष्टावक्र न माना। "मैं ब्रह्मचर्य का व्रत कर रहा हूँ। मुझे छोड़ दो।" उसने उससे प्रार्थना की। अगले दिन उस स्त्री ने उसको स्नान करवाया, "मुझ से तुम विवाह करलो।" उसने फिर कहा।

"देखने में तो तुम बहुत छोटी मालूम होती हो। तुम्हारी शादी तुम्हारे पिता को नहीं तो बड़े भाई को करनी चाहिए। पहिले तुम यह बताओ कि तुम हो कौन!" अष्टावक्र ने उससे पूछा।

उसने हँसकर कहा—"मैं उत्तर दिशा हूँ। तुम्हारी परीक्षा के लिए वदान्य ने मुझे नियुक्त किया है। परीक्षा में तुम उत्तीर्ण हुए। अब तुम घर जाओ, और सुप्रभा से विवाह करके सुख से रहो।"

अष्टावक्र वापिस चला गया। और उसने सुप्रभा से विवाह कर लिया।

उसके बारे में पुराणों में एक और बात भी है। उसने पानी में रहकर बहुत दिन तपस्या की। उस समय रम्भा आदि अप्सराओं ने आकर, अपने नृत्य और संगीत से उसको सन्तुष्ट किया। उसने उनसे कोई वर माँगने के लिए कहा।

"हम विष्णु की पत्नियाँ होना चाहती हैं" अप्सराओं ने कहा। "विष्णु जब कृष्ण का अवतार लें, तब तुम उनकी पत्नी बनोगी।" अष्टावक्र ने उनसे कहा। उसके पानी में से निकलते ही वे अप्सरायें उसको देखकर हँसीं। अष्टावक्र ने क्रुद्ध होकर शाप दिया। "कृष्ण की पत्नियाँ बनने के बाद तुम्हारे पति की अनुपस्थिति में तुम जंगलियों द्वारा अपमानित होगी।"

बेतुका हिसाब

"कौन है यह जो ज़ोर ज़ोर से पढ़कर आसमान उठाये हुए है!" बाबा चिल्लाया।

"हमारे घर में नहीं, बाबा। सामने के घरवाले ने सौ में सौ मार्क पाने के लिए आज से परीक्षा के लिए पढ़ना शुरू कर दिया है।" बच्चों ने कहा।

"क्या कोई जितने ज़ोर से पढ़ता है, उतने ही ज़्यादह मार्क आते हैं?" बाबा ने पूछा।

"बाबा, वासुदेव का दोस्त सूर्यनारायण रोज़ एक घंटा ही पढ़ता है। उसने पिछली परीक्षा में सौ में साठ और सत्तर पाये। इसलिए वासु, रोज़ डेढ़ घंटे पढ़कर, सौ में से सौ मार्क पाने की कोशिश में है।"

"अरे इसे ही बेतुका हिसाब कहते हैं। एक आदमी पन्द्रह मिनट में आधा सेर चावल खाता है, तो क्या वह एक घंटे में दो सेर चावल खायेगा? इसे ही बेतुका हिसाब कहते हैं। एक कहानी भी है।" कहकर बाबा ने सुंघनी निकाली।

"क्या कहानी है बाबा? बताओ बाबा" सब बच्चे पूछने लगे।

"अच्छा, शोर न करो।" सुंघनी लेकर वह यों सुनाने लगा।

एक देश था। उसका एक राजा था। वह राजा बहुत छोटा था। हाल में ही वह गद्दी पर बैठा था। गद्दी पर आते ही उसकी शादी भी हुई थी। जब से विवाह की बात उठी थी, तब से हर चीज़ अच्छी तरह होने लगी। राजा की साख बढ़ी। देश में अराजकता कम हुई। वह सोच कि यह सब पत्नी के कारण

ही हुआ था, राजा उसे बड़े आदर की दृष्टि से देखने लगा। यह सोच कि राजा उसकी सुन रहा था, रानी उसको कदम कदम पर सलाह दिया करती। राजा भी, जो कुछ रानी कहती, किया करता। न मालूम यह भी क्या भाग्य था कि जो कुछ राजा, रानी की सलाह पर चलता, उसका नतीजा अच्छा निकलता। इस तरह बहुत दिन गुजर जाने के बाद, राजा को उस पर पूरा भरोसा हो गया।

मालूम है, एक दिन क्या हुआ? राजदरबार में सैनिक तीन चोरों को लाये। क्योंकि, चोर चोरी के माल के साथ पकड़े गये थे, इसलिए लम्बी चौड़ी सुनवाई के बिना ही राजा ने उनको सज़ा दी। चोरों को पकड़नेवाले को, ईनाम देने के ख्याल से राजा ने पूछा—"इन चोरों को किसने पकड़ा है?"

राजा को बताया गया कि एक मामूली कुत्ते ने उनको पकड़वाया था। क्या यह आश्चर्य का विषय नहीं है? इसलिए दरबार के खतम होते ही अन्तःपुर में जाकर रानी को उसने कुत्ते के बारे में बताया। रानी ने उस कुत्ते की खूब तारीफ़ की।

कुछ दिन बाद मन्त्री ने खज़ानों का हिसाब लाकर कहा—"हमारी सेना को जल्दी ही वेतन देना होगा। वेतन देने के बाद हमारे पास अधिक धन नहीं बचेगा। क्या किया जाय?" मामूली हालत में राजा को मन्त्री से पूछना चाहिए था कि अब क्या किया जाय? पर उसने तो मन्त्री से सलाह लेना कभी का छोड़ दिया था। अब सलाह देने के लिए रानी जो थी। इसलिए राजा ने मन्त्री की बात सुनकर कहा—"अच्छा तो, देखेंगे।"

फिर मालूम है उसने क्या किया? घर में आकर उसने पत्नी से कहा—"मालूम है, खज़ाने में सिपाहियों को देने के लिए पैसे भी नहीं हैं! यदि कुछ न किया गया तो आफ़त है।"

"सैनिकों की क्या ज़रूरत है? इनको खाना देना फ़िज़ूल है। वेतन देना फ़िज़ूल है। आपको याद है, एक एक कुत्ते ने कैसे तीन तीन चोरों को पकड़वाया था। आप सैनिकों को बर्खास्त करके, उनकी जगह कुत्तों को रखवाइये। तीन तीन सैनिकों की जगह यदि हमने एक एक कुत्ता पाला, तो काम हो जायेगा। वेतन, रसद, हथियारों पर खर्च नहीं होगा। समय पर कुछ भोजन दे देंगे, तो कुत्ते बड़ी वफ़ादारी से काम करेंगे।" रानी ने कहा।

राजा को यह सलाह जँची। अगले दिन उसने मन्त्री से कहा—"उनके वेतन उनको देकर, सब सैनिकों को बर्खास्त कर दीजिये। उनकी जगह हम कुत्ते पालेंगे। याद रखिये, तीन तीन सैनिकों की जगह एक एक कुत्ता। बहुत-सी बचत होगी। मन्त्री चकराया और सेनापति गरमाया।

"क्या सोच विचारकर ही यह हुक्म दे रहे हैं आप!" मन्त्री ने पूछा।

"अब सोचने की कोई ज़रूरत नहीं है। जो मैं कहूँ वह करवाइये।" राजा ने कहा।

"सेना ही न हो, तो मेरी क्या ज़रूरत है? कुत्तों को युद्ध के लिए तैयार करने की शक्ति मुझ में नहीं है।" सेनापति ने कहा। सेनापति यदि चला गया, तो और भी खर्च बचेगा—यह सोचकर राजा ने खुशी खुशी सेनापति का इस्तीफ़ा भी मंज़ूर कर लिया।

सैनिक चले गये। कुत्ते उनकी जगह आये। वे हमेशा भौंकते रहते, लड़ते रहते और सिपाही उनको वश में न रख पाते।

इतने में राजा के पास एक बुरी खबर आई। वह यह कि कोई भारी सेना लेकर उसके राज्य पर आक्रमण करने के लिए आ रहा था। मन्त्री ने यह खबर बताकर, राजा से पूछा—"अब क्या किया जाय!"

"सोचने की क्या बात है, अपने सैनिकों को, कुत्तों के साथ मोर्चे पर भेजिये।" राजा ने कहा।

कुत्ते जब लड़ने निकले, तो शत्रु सैनिकों ने उनकी ओर रोटी के टुकड़े फेंके। कुत्ते दुम हिलाते उन सैनिकों के पास इकट्ठे हो गये। युद्ध समाप्त हो गया। मन्त्री ने राजा से कहा—"हमारे कुत्ते शत्रुओं की तरफ़ चले गये हैं। अब क्या किया जाय!"

राजा पसीना पसीना हो गया। शत्रु सेना ने नगर में प्रवेश किया। परन्तु वे सचमुच शत्रु सैनिक न थे। वे सैनिक वे ही थे, जिनको राजा ने नौकरी से निकाल दिया था। सेनापति ही उनका नेतृत्व कर रहा था, राजा को सबक सिखाने के लिए ही उन्होंने यह नाटक रचा था।

मन्त्री के यह बताने पर, राजा ने बिना कुछ कहे उन सब को फिर काम पर ले लिया। सेनापति को भी फिर काम दिया। उसके बाद न उसने मन्त्री से सलाह माँगी। न उसने दी ही।

बाबा ने कहानी पूरी करके बच्चों से कहा—"अब तुम जाकर अपने पाठ पढ़ो। जो कुछ पढ़ो, उसको समझना ज़रूरी है, न कि शोर कर करके आसमान उठा देना।"

"तेरा" ★ [रामतीर्थ कथा]

गुरु नानक बचपन से बड़े भक्त थे। जब वह युवक थे तो उनको एक काम पर लगाया गया। काम लोगों में धन और धान्य बाँटने का था।

एक दिन उनके मालिक ने चार आदमियों को उनके पास भेजकर उनको तेरह सेर आटा देने के लिए कहा। नानक अपनी भाषा में "एक, दो, तीन" कहकर आटा तोलने लगे। बारह सेर तोलने के बाद "तेरा" आया। तेरह के आते ही नानक ने तन्मय होकर भगवान पर मन लगाया।

"तेरा" का अर्थ गिनती के अलावा "तेरा" भी है। इसीलिए नानक तन्मय हो गये थे। उसी तन्मयता में वे "तेरा तेरा तेरा" कहते कहते मूर्छित होकर गिर गये।

भीम के जमीन्दार मधुर के पास सोहनलाल नाम का एक आदमी आया जाया करता था। वह जमीन्दार की मर्जी के मुताबिक बात किया करता। मीठी मीठी बातें सुनाता। यों दिखाता, जैसे कोई बड़ा आदमी हो। जब जब ज़रूरत होती, तो जमीन्दार के पास से पैसे ले जाकर आराम से जिन्दगी बसर कर रहा था।

क्योंकि जमीन्दार को भी सोहनलाल पसन्द था। इसलिए जो कुछ रुपया वह सोहनलाल को देता, उससे वापिस न लेता। यह जानकर जब कभी सोहनलाल जमीन्दार से रुपया लेता, तो यों दिखाता कि वह उसे वापिस दे देगा।

जमीन्दार की मेहरबानी पर वह यों दिन रात जी रहा था। पर चूँकि स्वभाव से सोहनलाल भद्रपुरुष न था इसलिए उसे अपने खोदे हुए गढ़े में गिरना पड़ा।

"जमीन्दार का जमाई बिल्कुल बावला था। उस जैसे को अपनी लड़की देने में जमीन्दार ने बड़ी जल्दबाजी की। उसमें रूप तो है, पर अक्ल बिल्कुल नहीं है।" गाँव में उसने किसी से कहा।

जो जमीन्दार को देखकर उसका आदर करते थे सोहनलाल को देखकर उसे दुत्कारते। गाँव में ऐसे भी लोग थे जिनको उससे इसलिए डाह थी क्योंकि जमीन्दार उसकी सुनता था। उन्होंने जाकर जमीन्दार से जो कुछ सोहनलाल ने कहा था, बताया। क्योंकि सोहनलाल पर जमीन्दार को खूब विश्वास था इस वजह से उसने पहिले तो उनका विश्वास ही नहीं किया। पर

जब तीन चार ने यही बात कही, तो ज़मीन्दार जान गया कि सोहनलाल भद्रपुरुष न था। उसका स्वभाव अच्छा था पर दिल बड़ा नाज़ुक था। यदि वह टूट जाता तो फिर न जुड़ता। इसलिए ज़मीन्दार को सोहनलाल पर बड़ा गुस्सा आया। पर उसने अपना गुस्सा छुपाये ही रखा।

सोहनलाल इस बारे में बिलकुल नहीं जानता था। एक दिन ज़मीन्दार की मदद के लिए वह उसके घर गया। उसने नौकर से खबर भिजवाई कि वह उससे मिलने आया हुआ था।

"सोहनलाल मेरे लिये आया हुआ है! तुरत जाने के लिए कहो। कह दो कि कभी मेरे घर न आये।" ज़मीन्दार गरमाया।

"ज़मीन्दार आपको नहीं देखना चाहते। इधर कभी न आना, उन्होंने कहलवाया है।" नौकर ने सोहनलाल से कहा।

सोहनलाल को यह सुनकर आश्चर्य हुआ। उसे ही अपनी कानों पर विश्वास नहीं हुआ। "शायद तुमने गलत सुना है। कहना कि फिर सोहनलाल आया है और एक मिनट के लिए ही बातचीत करना चाहता है।" नौकर को समझाकर उसने फिर अन्दर भेजा।

"अरे, क्या तुममें अक्ल नहीं है! मैं न कहा तो था कि मैं उस सोहनलाल का मुँह नहीं देखूँगा।" ज़मीन्दार नौकर पर गरजा।

नौकर ने आकर जो कुछ ज़मीन्दार ने कहा था सोहनलाल से कहा। सोहनलाल ताड़ गया कि किसी ने उसके बारे में ज़मीन्दार के कान भरे थे। इस कारण ही वे इतने

नाराज थे। यदि जमींदार का गुस्सा शुरु शुरु में ही कम न कर दिया गया तो आगे जाकर बड़ी आफ़त आयेगी। यह सोच सोहनलाल घर के बाहर ही बैठ गया, "उनकी मेहरबानी। जबतक वे बाहर न आयेंगे, तबतक मैं यहीं बैठा रहूँगा।" नौकरों से उसने कहा।

नौकर ने अन्दर जाकर जमींदार से कहा कि सोहनलाल बाहर धरना दिये हुए था। जमींदार को बड़ा गुस्सा आया। वह यह सोच ही रहा था कि कैसे सोहनलाल को भेजा जाये कि भीम उनके पास आया।

तुरत उन्होंने भीम से कहा—"देखो बेटा, सोहनलाल को जानते हो न! यह मुझे देखने के लिए आया हुआ है। मैं उसका मुँह भी नहीं देखना चाहता। मैंने नौकरों से कहलवाया, पर वह सुन नहीं रहा है। इसलिए तुम जाकर उससे साफ़ साफ़ कह दो। समझे, बात बात ही है। कुछ मारकर कहना, पर देखो फिर हमारे घर न आवे।"

"यह कितनी बड़ी बात है!" भीम बाहर आया। बाहर जाते जाते उसने एक लाठी ली। भीम ने सोहनलाल के पास जाकर उसके मुँह पर ज़ोर से लाठी मार कर कहा—"कभी अपना मुँह फिर यहाँ न दिखाना।" फिर लाठी के दो टुकड़े करते हुए कहा—"हाँ बात बात ही है।"

सोहनलाल जान बचाकर भाग गया। फिर वह कभी जमींदार के घर न आया।

(अगले महीने एक और घटना)

भूतों से न डरनेवाले

संसार में जैसे भूतों से डरनेवाले हैं, वैसे भूतों को डरानेवाले लोग हैं और कई ऐसे भी हैं, जो भूतों से नहीं डरते। इस प्रकार के साहसियों के बारे में अनेक कहानियाँ हैं।

एक गाँव में एक किसान रहा करता था। वह एक दिन, तड़के अन्धेरे में, कोस दूरी पर हाट देखने गया। गाँव छोड़कर, जब वह रास्ते पर जा रहा था, तो उसको एक आदमी-सा कुछ दिखाई दिया।

"कौन है आप!" किसान के लड़के ने आदत के अनुसार पूछा।

"मैं भूत हूँ" उस आकृति ने कहा।

किसान साहसी था। वह डरा नहीं। "अरे यह क्या कह रहे हो! मैं भी भूत हूँ।" उसने कहा।

"कहाँ जा रहे हो!" भूत ने पूछा।

"हाट" किसान के लड़के ने कहा।

"मैं भी वहीं जा रहा हूँ। मिलकर चलें, चलो चलें।" भूत ने कहा।

कुछ दूर जाने के बाद भूत ने कहा—"दोनों के चलने के लिए चार पैरों की क्या जरूरत है! तुम थोड़ी दूर मुझे ढोओ। कुछ दूर मैं तुम्हें ढोऊँगा। जल्दी ही हाट पहुँच जायेंगे।"

"तो, तुम पहिले मेरे कन्धे पर चढ़ो।" किसान ने कहा।

भूत किसान के कन्धों पर बैठ गया। भूत था, इसलिए उसमें भार ही न था। जब किसान ने उसको थोड़ी दूर ढोया, तो भूत ने कहा—"तुम ठहरो, अब मैं तुम्हें ढोऊँगा।"

महेन्द्र कुमार ओझा

परन्तु भूत ने किसान को ढोते हुए आश्चर्य से कहा—"अरे, तुम तो बड़े भारी हो!" भूत को तो भारी नहीं होना चाहिए।"

"मैं थोड़ी देर पहिले ही तो भूत बना था।" किसान के लड़के ने कहा। भूत इस पर सन्तुष्ट हो गया। "मुझे अभी अनुभव नहीं है। भूतों के लिए कौन-सा बड़ा खतरा है?"

"हमारे लिए एक ही बड़ा खतरा है। जीवित व्यक्ति को हम पर थूकना नहीं चाहिए। यह बात याद रखो।" भूत ने कहा।

दोनों को एक नहर पार करनी पड़ी। नहर को दोनों ने अलग अलग पार करने का निश्चय किया। चुपचाप भूत ने नहर पार कर ली। परन्तु किसान के लड़के ने जब नहर पार की तो न मालूम क्यों काफ़ी शोर हुआ।

"नहर पार करने के लिए क्यों इतना शोर करते हो?" भूत ने उस पर गुस्सा किया।

"कहा तो था कि अभी अनुभव काफ़ी नहीं है।" किसान के लड़के ने बिना डरे कहा।

शहर के बाद हाट अधिक दूर न था। "यहाँ से हाट तक मैं तुम्हें ढोऊँगा।" कहकर किसान ने भूत को अपने कन्धे पर बिठा लिया।

जब वे दोनों हाट पहुँचे तो सवेरा हो गया था, जब उसने भूत को कन्धे पर से उतरते देखा, तो किसान ने उसकी टाँग पकड़ ली। वह भूत बहुत चिल्लाया। पर किसान ने उसकी एक न सुनी। उसको किसान ने टाँग पकड़कर उतारा। पास ही बिकाऊ भेड़ें खड़ी थीं। यह देख भूत ने भी भेड़ का रूप धारण किया। वह बचकर उनमें मिल जाना चाहता था। क्योंकि किसान ने पहिले ही भूतों का रहस्य जान लिया था, इसलिए उसने भेड़ भूत पर थूका।

भूत के लिए, भेड़ के रूप को छोड़ना असम्भव हो गया। किसान उसके गले के बाल पकड़कर, कसाई के पास ले गया। उसको उसने अच्छे दाम पर बेच दिया।

* * *

एक कस्बे में एक बलवान आदमी था। उसके बल और बहादुरी का कोई ठिकाना

न था। परन्तु वह बड़ा गरीब था। उसे कोई काम भी आता जाता न था। इसलिए, मन्डी में माल खरीदकर, गली गली घूम घूमकर उसे बेचने की कोशिश करता, जो धन वह इस तरह कमाता, वह उसके खाने के लिए ही मुश्किल से काफ़ी रहता। उस जैसे को फिर कोई कैसे विवाह में लड़की देता!

"संसार में मुझ से अधिक बलवान या बहादुर नहीं है। तो भी क्या! गरीबी मेरे जीवन को बरबाद कर रही है। मुझे कोई लड़की भी नहीं दे रहा है।" इस

फेरीवाले ने परिचितों के सामने अपना रोना रोया।

उनमें से एक उसका रोना सुन सुनकर ऊब गया। "यदि तुम इतने ही बहादुर हो, तो क्यों नहीं हमारे कस्बे के बड़े सेठ के नये खरीदे घर में से भूत को भगा देते! वह तुम्हें कितना ही धन देगा। क्यों गरीबी झेलते हो!"

यह बात सच थी। उस कस्बे के बड़े सेठ ने बहुत-सा धन देकर, एक ऊँचे पुराने महल को खरीदा था, उसके अहाते को ठीक करके, बाग बाग ठीक करके, घर की मरम्मत वगैरह करके, उसने गृह प्रवेश भी कर लिया था। गृह प्रवेश के दिन ही रात को उसके दो नौकरों की अजीब मौत हुई। तुरन्त सेठ ने वह मकान खाली कर दिया और अपने पुराने मकान में चला गया। उसके बाद किसीने भूल कर भी उस घर में रहने का साहस नहीं किया। अच्छे भले घर को छोड़ना पड़ गया।

यह फेरीवाला भी जानता था। पर वह यह नहीं जानता था कि भूतों को भगाकर, वह सेठ से इनाम पा सकता था। वह

सबेरा होते ही, वह बड़े सेठ के घर गया। "हुजूर! आपके महल से मैं भूतों को भगा सकता हूँ। आप मुझे क्या इनाम देंगे?"

"यदि तुमने भूतों को भगा दिया तो मैं तुमको दस हजार रुपये दूँगा। नगर के बाहर की कुटिया भी दे दूँगा।" बड़े सेठ ने कहा। फेरीवाला बड़ा खुश हुआ। उसे सेठ पर विश्वास नहीं था। इसलिए उसने उससे यह कागज पर लिखवा भी लिया। फिर वह भूतों के महल की ओर धीमे धीमे चला।

सेठ ने, उसे जिन चीजों की जरूरत थी, वे भी दिलवायीं। फेरीवाले ने एक लालटेन, सेर भर लहसन, पाँच सेर पकौड़ी माँगी। सेठ ने उसके साथ अपने नौकरों को भेजा। वे उसे घर में भेजकर, बाहर ताला लगाकर, अन्धेरा होने से पहिले ही चले गये।

फेरीवाले ने महल में, एक कमरा साफ किया। लालटेन जलाकर पकौड़ी खायी। सेर भर लहसन भी चबा गया। फिर लालटेन बुझाकर, उस कमरे में रखे पलंग पर बैठकर वह भूत की तरह देखने लगा।

आधी रात बाद, कमरे के बाहर आहट हुई। धड़ाम से किवाड़ खोलकर, भूत अन्दर आया। जब तक भूत उसके पास न आया, तब तक फेरीवाला चुपचाप बैठा रहा, फिर झट उस पर कूदा और उसने उसके हाथ जोर से पकड़ लिए।

भूत उसकी पकड़ को न छुड़ा सका। वह उसके मुख पर फूँकने लगा। क्योंकि उसकी साँस बहुत ठंडी थी और सूइयों की तरह चुभ रही थी, फेरीवाले ने अपना मुँह एक तरफ फेर लिया। भूत के श्वास से उसका गला काठ-सा होता जाता था।

उसको और ज़ोर से पकड़ लिया। भूत अदृश्य तो नहीं हुआ पर उसे ऐसा लगा जैसे वह धीमे धीमे छोटा होता जा रहा हो। पर उसका रूप उस अन्धेरे में न देख पाया।

सवेरा होते ही फेरीवाले के मित्र बड़े सेठ के नौकरों ने आकर किवाड़ खोले। उनको डर था कि फेरीवाला मर मरा गया होगा। परन्तु वह सही सलामत था। उसके दोनों हाथों में एक लकड़ी थी।

"ये तो भूत" कहकर उसने उन लोगों को वह लकड़ी दिखायी। सबने मिल कर उस लकड़ी को दूर ले जाकर जला दिया। जब वह जली तो ऐसी बू आयी जैसे कोई लाश जल रही हो।

फिर उसके बाद उस महल में कभी कोई भूत नहीं दिखाई दिया। बड़े सेठ ने उसको साफ करवाया और फिर उसमें प्रविष्ट हुआ। किसी पर कोई आपत्ति नहीं आयी।

सेठ ने एकरारनामे के मुताबिक फेरीवाले को दस हज़ार रुपये दिये। कस्बे के बाहर की कुटिया भी दे दी।

फेरीवाला यह दर्द न सह सका। उसने माथा फेरकर भूत के मुँह पर ज़ोर से साँस छोड़ा। इस श्वास के साथ लहसुन की बू भी आयी। भूत बू सह न सका, उसने अपना मुँह एक तरफ फेर लिया। जब कभी वह अपना मुँह उसकी तरफ फेरता तो वह उसके मुँह पर थूकता। इस तरह सवेरे तक उन दोनों में ज़बर्दस्त युद्ध चलता रहा। पर फेरीवाले ने भूत के हाथ नहीं छोड़े।

सवेरा होने को था। फेरीवाले ने यह सोचकर कि कहीं वह निकल न जाये

पेशीवाला शांति पाके उस कुटिया में आराम से रहने लगा।

*   *   *

एक नगर में एक विद्वान रहा करता था। एक दिन उसके घर एक मित्र अतिथि होकर आया। यद्यपि गर्मियों के दिन थे फिर भी उस विद्वान के घर का एक कमरा ठंडा और आरामदेह था।

मित्र ने विद्वान से कहा—"अरे भाई, यह कमरा तो बड़ा अच्छा है। आज रात को मेरा बिस्तर यहीं लगवाओगे?"

"शायद तुम नहीं जानते। इस कमरे में भूत है। दिन में तो कोई खतरा नहीं है पर रात में इस कमरे में कोई नहीं जाता।" विद्वान ने कहा।

"भूत! कैसा भूत?" मित्र ने पूछा।

"कुछ दिन पहिले हमारी नौकरानी ने छत के शहतीर से लटक कर आत्म हत्या कर ली थी। तब से वह भूत बनकर इस कमरे में ही रह रही है।"

यह सुनते ही मित्र ने कहा कि अवश्य वह उसी कमरे में सोएगा। उसे भूतों से डर न था। विद्वान ने भी उसकी इच्छा

न दुखानी चाही। उस के लिए उस कमरे में ही बिस्तर लगवाया। फिर बहुत देर तक पढ़ता रहा। आखिर पुस्तक बन्द करके बिस्तर पर उसने कमर सीधी की।

वह बिस्तरे पर लेटा ही था कि भूत दिखाई दिया। वह कैसे अन्दर आ रहा था वह देख ही रहा था। किवाड़ों के बीच में से कागज़ की कोई चीज़ आयी वह फिर बादल सी हो गयी। फिर उसमें से भी रूप निकला।

वह भी कमरे के बीच में खड़े होकर जीभ बाहर निकाल कर सिर नीचे किये हुए थी। फाँसी लगाने वाले व्यक्ति ऐसी ही चेष्टा करते हैं।

परन्तु वह उसकी चेष्टा देखकर डरा नहीं। "वाह खूब। फिर करो।" भूत से कहा।

पिशाची जान गई कि वह उसे डरा न सकी थी। उसने एक क्षण सोचकर अपना सिर वहीं रखे मेज़ पर रखा।

"अब तुम सिर के होने पर ही मुझे डरा न सके। क्या तुम जैसे ठूँठ को देखकर मैं डरूँगा!" उसने कहा।

यह सुन पिशाची उठकर चली गई।

यह बात उसने अगले दिन मित्र से कही तो उसने कहा—"देखो कभी इस कमरे में फिर न सोना। मैंने पहिले ही कहा था।" परन्तु मित्र ने उसकी बात न सुनी। उस दिन भी उसने उसी कमरे में सोने की जिद् पकड़ी और वहीं सोया।

उस दिन रात को भी पिशाची आयी। वह उसे देखकर, डर कर, "छी, फिर यही ज़िद्दी आ मरा।" अदृश्य हो गई।

किष्किन्धा काण्ड

वसन्त का समय था। पम्पा सरोवर का पानी निर्मल था। उसमें कमल विकसित थे। सरोवर के आसपास का वन अत्यन्त मनोहर था। कोयल कूक रही थी। मयूर नाच रहे थे।

यह प्राकृतिक शोभा देखकर, राम के मन में एक तरफ आनन्द हुआ, तो दूसरी तरफ सीता के विरह के कारण विषाद भी हुआ।

यदि किसी चीज को देखते, तो सीता याद आ जाती। विह्वल हो, उन्होंने

के बिना जीना असम्भव है। मैं अपने प्राण छोड़ दूँगा। तुम भरत के पास चले जाओ।"

लक्ष्मण ने राम को समझाया। अत्यन्त प्रेम के कारण ही यह दुःख हो रहा था। उस प्रेम और विरह को दूर रखकर सीता को खोजना है। रावण का पता लगाना है। यदि वह सीधे तौर पर सीता को वापिस न देगा, तो उसको मारना भी होगा। [illegible]

राम लक्ष्मण जब से पम्पा सरोवर के पास आये थे, तब से सुग्रीव, जो ऋष्यमूक पर्वत पर था, उनको देखता जा रहा था। उन दोनों को स्वच्छन्द घूमता देख, सुग्रीव ने सोचा कि उन दोनों को वाली ने उसको मारने के लिए भेजा था, वह अपने मन्त्री वानरों के साथ मातंगाश्रम में आ बैठा—क्योंकि वहाँ उसको वाली का भय न था।

सुग्रीव ने अपने मन्त्रियों से कहा—"कोई वेष बदलकर, वल्कल वस्त्र पहिन कर, इस जंगल में आया है। जानते हो क्यों! वाली ने ही उन्हें भेजा होगा।" यह सुन सब घबरा गये।

तब सुग्रीव के मन्त्रियों में से एक ने जिसका नाम हनुमान था कहा—"तुम सब क्यों यों डर रहे हो, मैं नहीं समझ पा रहा हूँ। इस ऋष्यमूक पर्वत पर वाली नहीं आ सकता, कहीं पता भी नहीं लगा। राजा का मन इतना चंचल नहीं होना चाहिए।"

यह सुन सुग्रीव ने कहा—"मैंने कब कहा है कि वाली यहाँ आया है। इन मनुष्यों को देखो, उनके बड़े-बड़े हाथों को, में तलवार देखो, उनके धनुष बाण देखो, उनको देखकर किसी को भी डर हो सकता है। वाली ने ही उनको अवश्य भेजा होगा। वाली चूँकि राजा है, इसलिए उसके कई सहायक भी होंगे। हमें बहुत सावधान रहना होगा। नहीं तो शत्रु, हमें धोखा देकर मार देंगे। वाली बड़ा चालाक है। इसलिए तुम वेष बदलकर उनके पास जाओ, उनसे बात करो और उनका रहस्य जानकर आओ।"

अपने राजा सुग्रीव का मतलब जानकर, हनुमान ने वानर रूप छोड़ा और ब्रह्मचारी

का रूप धारण कर राम-लक्ष्मण के पास आया।

विनयपूर्वक उनको नमस्कार करके उसने कहा—"आप कोई तो बड़े तपस्वी मालूम होते हैं। राजर्षि लगते हैं। आपको तो कहीं राज्य करना चाहिए, आप क्यों यहाँ वल्कल वस्त्र पहिने, पम्पा सरोवर के आसपास यों घूम रहे हैं? आप कौन हैं? हमारा राजा सुग्रीव, अपने भाई से भगाये जाने पर मारा मारा फिर रहा है। मैं उसका मन्त्री हूँ। मेरा नाम हनुमान है। मेरा पिता वायुदेव है। सुग्रीव की इच्छा पर मैं यह वेष धारण करके ऋष्यमूक पर्वत से यहाँ आया हूँ। मेरे पास कामरूप और कामगमन शक्तियाँ हैं।"

हनुमान की बातें सुनकर राम के मुँह पर आनन्द की रेखायें पड़ गईं। उन्होंने लक्ष्मण से कहा—"इसे तुम ही समझाकर भेज दो इसकी बातों से मालूम होता है कि यह अच्छा पंडित है। इस प्रकार के दूत जिस राजा के पास हों, वह ही राजा है।"

तब लक्ष्मण ने हनुमान की ओर मुड़कर कहा—"हनुमान, हम वानर सुग्रीव को

भलीभाँति जानते हैं। हम उन्हीं को खोजते आ रहे हैं। ये मेरे भाई राम हैं। इनको सुग्रीव की सहायता की आवश्यकता है। सुग्रीव को ये फिर से उसका राज्य दिलवा सकते हैं।" कहते हुए उसने राम की कहानी विस्तारपूर्वक सुनाई।

अन्त में उसने कहा—"उस राक्षस का पता, जो सीता को उठा ले गया है, हमें सुग्रीव द्वारा ही मालूम हो सकता है—यह कबन्ध ने बताया है। सीता की खोज में सुग्रीव को हमारी मदद करनी होगी।

जिस किसी ने जो कुछ माँगा, वह सब राम ने दे दिया और वैसा राम अब सुग्रीव की शरण में आया है।" इन सब बातों को कहते, लक्ष्मण को बड़ा दुख हुआ।

हनुमान ने कहा—"आप बड़े लोग हैं। आपको खोजते ही सुग्रीव को यहाँ आना था। यह उसका सौभाग्य है कि आप ही उसको खोजते आये हैं। सीता देवी को खोजने में सुग्रीव आपको पूरी मदद देगा। आइये, अब हम सुग्रीव के पास चलें।"

यह जानकर कि हनुमान विश्वास योग्य था, राम लक्ष्मण उसके साथ जाने के लिए तैयार हो गये। हनुमान ब्रह्मचारी का वेष छोड़कर फिर से वानर हो गया और राम लक्ष्मण को अपने कन्धों पर चढ़ाकर, वह ऋष्यमूक पर्वत की ओर निकल पड़ा।

सुग्रीव ऋष्यमूक पर न था। वह मलय पर्वत पर था। हनुमान ने उसके पास जाकर कहा कि राम लक्ष्मण आये हुए थे और उनसे स्नेह करना उसके लिए हितकर था। उसने सुग्रीव को यह भी बताया कि राम लक्ष्मण को उससे किस प्रकार की सहायता की आवश्यकता थी।

हनुमान की बातें सुनकर, सुग्रीव का भय जाता रहा। उसने खुश होकर अपना वानर रूप छोड़ दिया। सुन्दर मनुष्य के रूप में, वह राम लक्ष्मण से मिलने आया। उसने राम से कहा—"आपके बारे में हनुमान ने सब कुछ कहा है। आप महाराजा हैं और मुझ वानर से सहायता माँगने आये हैं। यह मेरे लिए बहुत गौरव की बात है,

लाभप्रद थी।" उसने यह कहते हुए अपना हाथ बढ़ाया।

राम ने सुग्रीव का हाथ पकड़कर अपना स्नेह व्यक्त किया। फिर राम ने सुग्रीव का आलिंगन किया।

हनुमान ने अग्नि बनाई। उसकी पूजा करके, उसने उसको राम और सुग्रीव के बीच में रखा, उन दोनों ने अग्नि की परिक्रमा की और अग्नि का प्रणाम करके, परस्पर मैत्री स्थापित की। तब से एक के दुख, सुख दूसरे के भी थे, सुग्रीव एक टहनी तोड़कर लाया। राम और सुग्रीव उस टहनी पर बैठे।

इसी प्रकार हनुमान भी एक टहनी लाया और लक्ष्मण और हनुमान उस टहनी पर बैठे। तब सुग्रीव ने राम से कहा—"राम, मेरे भाई वाली ने मेरे साथ अन्याय किया है। मेरी पत्नी को वह उठा ले गया है। वाली के भय से मैं यों मारा मारा फिर रहा हूँ। आप मुझे अभय दीजिये।"

"सुग्रीव तुम्हारी मदद के बदले में मैं तुम्हारे भाई वाली को मार दूँगा। वह मेरे बाण से ही मरेगा।" राम ने कहा।
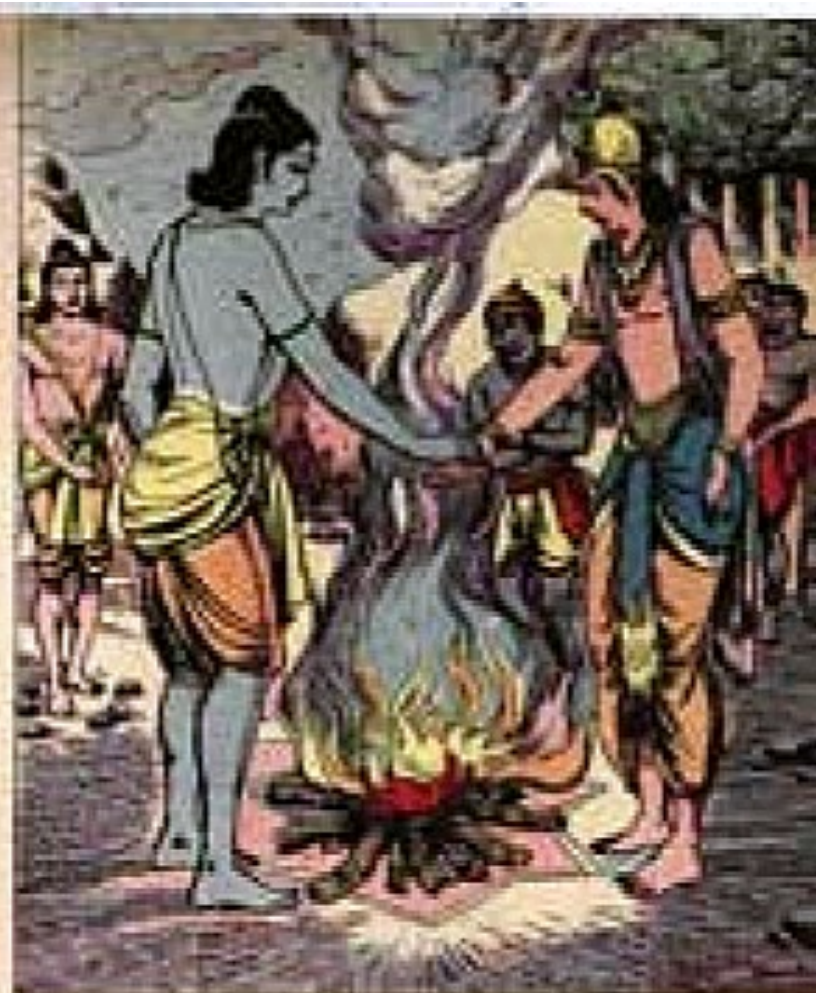
"आपके अनुग्रह से ही मैं अपना राज्य और पत्नी पाऊँगा। आप जिस काम पर इन बीहड़ जंगलों में घूम रहे हैं, उसके बारे में हनुमान ने मुझे बता दिया है। तुम और तुम्हारे भाई को गया हुआ देख, रावण जबर्दस्ती सीता को उठाकर ले गया है। उसने जटायु को भी, जिसने उसे रोका था, मार दिया है। तुम्हारा पत्नी वियोग, जल्दी ही खतम हो जायेगा। सीता देवी को चाहे, वे कहीं भी, तीनों लोकों में हों, हम लाकर आपको सौंप देंगे। अब मैं समझा, उस दिन मैंने सीता देवी को ही

देखा था। रावण के पास रोती-रोती बैठी थी। सीता को गगन मार्ग से जाते मैंने देखा है, उन्होंने मुझे और मेरे साथ के चारों वानर वीरों को देखा था, हमें देखकर, उन्होंने आभूषण भी आँचल में बाँधकर, फेंक दिये थे। हमने उन आभूषणों को सुरक्षित रख रखा है। आप उन्हें देखकर पहिचान सकते हैं।"

राम उसकी बातें सुनकर, आभूषण देखने के लिए उतावला हो उठे। सुग्रीव उठा और गुफ़ा में जाकर, सीता के आभूषणों की गठरी ले आया।
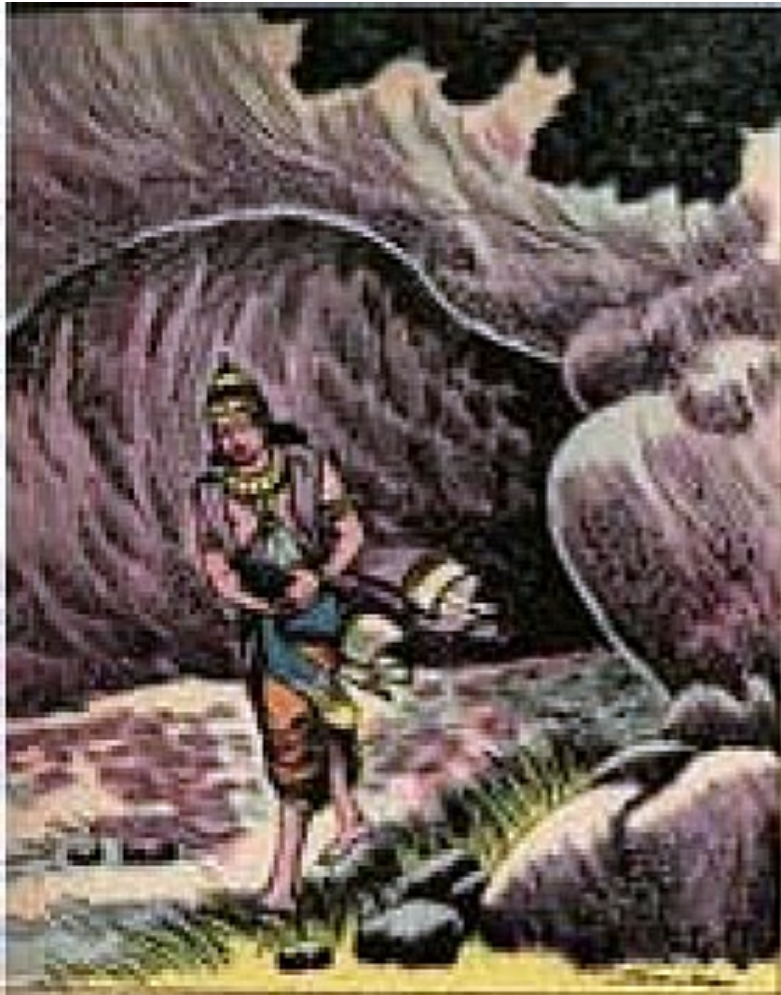
गठरी को देखते ही सीता की आँचल पहिचान कर—राम सिसकने लगे। उनकी आँखों में आँसू बहने लगे। उन्होंने कहा—"लक्ष्मण, देखो ये कपड़े और आभूषण जो सीता ने फेंके हैं, जब कि रावण उसको उठाकर ले जा रहा था। शायद इन्हें घास पर फेंका होगा। देखो, बिल्कुल चोट नहीं लगी है।"

लक्ष्मण ने सीता के आभूषणों को देखकर कहा—"मैं इन बालियों आदि को तो नहीं पहिचानता हूँ। पर पैरों के इन कड़ों को पहिचानता हूँ, जो मैंने नमस्कार करते हुए देखा था।

राम ने सुग्रीव की ओर मुड़कर कहा—"तुम्हारे देखते देखते ही तो वह राक्षस मेरी प्राण प्रिया को उठाकर ले गया था। वह कहाँ गया था! कृपा करके बताओ। मैं उसके प्राण अभी लेता हूँ।"

सुग्रीव ने कहा कि वह रावण के बारे में कुछ नहीं जानता था। परन्तु सीता को ढूँढने का मैं यथाशक्ति प्रयत्न करूँगा। मैं आज यह प्रतिज्ञा करता

हूँ। फिर उसने राम को ढाढ़स देते हुए कहा—"वानर होकर भी, मैं पत्नी के लिए किस तरह तड़प रहा हूँ! दुख से काम नहीं बनेगा। हिम्मत से काम लेना होगा।

राम को यह सुनकर सान्त्वना मिली। उन्होंने आँखें पोंछकर, सुग्रीव से कहा—"तुमने सचमुच जो बात मित्र को कहनी चाहिए, वह कही है। कष्ट काल में तुम जैसा विश्वासपात्र मित्र मिलना, सौभाग्य की बात है। तुम्हें सीता को ढूँढ़ने का प्रयत्न अवश्य करना होगा। अब बताओ, मैं तुम्हारी मदद कैसे करूँ? यह न सोचो कि मैं वह मदद कर पाऊँगा कि नहीं। मैंने वचन दे दिया है कि वाली को मार दूँगा। इसमें कोई झूठ नहीं है। मैंने कभी झूठ नहीं बोला है।"

राम की बातें सुनकर वानर बड़े खुश हुए। फिर राम और सुग्रीव ने एकान्त में बैठकर, अपने कष्टों के बारे में बातचीत की। सुग्रीव ने राम से कहा—"मेरा भाई वाली बड़ा बलशाली है। मैं युवराजा था, मुझे डाँट-डपट कर उसने भेज दिया है। प्राणों से भी प्यारी मेरी पत्नी को भी हर लिया। मेरे मित्रों को जेल में डलवा दिया। मुझे मारने के लिए उसने बहुत से प्रयत्न किये। उसके भेजे हुए वानरों में से मैंने बहुतों को मार दिया है। अपने भाई के डर से मैं आपको देखकर भी, आपके सामने नहीं आया। अब जो मेरे पास हैं, वे ये हनुमान आदि हैं। मैं इनके कारण ही आज जी रहा हूँ। जब तक मेरा परम विरोधी वाली मर नहीं जाता तब तक सुख नहीं है।"

१. **कृष्णमुरारी प्रसाद, गया**

चन्दामामा का कौन कौन-सा आप विशेषांक निकालते हैं ?

केवल एक, दीपावली पर ।

२. **नन्दकिशोर केशरवानी**

चन्दामामा के अन्तर्गत आप "पत्र मैत्री स्तम्भ" क्यों नहीं शुरू करते ?

सुझाव पर कोई आपत्ति नहीं, पर इसके कार्यान्विति में अभी कुछ कठिनाइयाँ हैं ।

३. **सुभाषचन्द्र जैन, मंडरिया**

चन्दामामा तो हिन्दी पत्रिका है, फिर इसमें आप कहीं जगह इंगलिश का विज्ञापन क्यों देते हैं ?

अक्सर नहीं देते । अगर कभी देते हैं, तो यह सोचकर ही कि चन्दामामा के कई पाठक अंग्रेज़ी भी समझते हैं ।

४. **रघुनाथ राणा, मेदनीपुर**

आप जो चन्दामामा के मुख, एवं अन्तिम पृष्ठोंपर आकर्षक विज्ञापन मुद्रण करते हैं, इसमें बच्चों को क्या लाभ है ?

चन्दामामा तो है और "चन्दामामा" आप बच्चों का ही है ।

५. **लालसिंह पन्जाबी, देहरादून**

क्या चन्दामामा बाहर के देशों में भी जाता है ?

हाँ ।

६. विजयकुमार अग्रवाल, झरिया

आप "चन्दामामा" के मूल्य में वृद्धि तो कर रहे हैं—पर आप क्या "चन्दामामा" में कुछ नवीनता लायेंगे?

अभी तो नहीं, अभी तो हम वर्तमान परिमाण को ही, वर्तमान मूल्य पर देने में कठिनाई पा रहे हैं।

७. विजय लखुआ, नागपुर

यदि संयोग से फ़ोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता में दो पाठकों की परिचयोक्तियाँ एक ही समान हों, तो इनाम कैसे बाँटा जायगा?

ऐसी परिचयोक्तियाँ, अक्सर हम नहीं लेते। फिर संयोग की बात है ही—जो संयोग से हमारे हाथ में पहिले आ जाती है, वही।

८. एन. प्रतापसिंह, कानपुर

क्या आप हर भाषा में फ़ोटो परिचयोक्ति स्तम्भ प्रकाशित करते हैं?

हाँ।

क्या उसके लिए परिचयोक्तियाँ भी उसी भाषा में होती हैं?

हाँ।

९. प्रितमसिंह, सिधौंग

क्या आप हमारे प्रश्नों का उत्तर हिन्दी में ही देते हैं या सभी भाषा की पत्रिकाओं में देते हैं?

हिन्दी में ही।

१०. मौसम साईंमल, देहली

अगर मैं कोई कहानी लिखना चाहूँ, तो क्या अन्तर्देशीय पत्र पर लिखूँ?

नहीं, साधारण कागज़ पर ही लिखिए।

Photo by Prabhakar Mahdik

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

कहीं निशाना चूक न जाये !

प्रेषक :
सुशीलकुमार खरे - भोपाल

Photo by S. G. Pradhan

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

दुश्मन हमसे छूट न पाये !!

प्रेषक :
सुशीलकुमार खरे - भोपाल

महाभारत

पाण्डवों के हिमालय से धन आदि लेकर वापिस आने के बाद, व्यास आये। युधिष्ठिर ने उनसे कहा—"आपके कहे के अनुसार हम धन लाये हैं। अब आप हम से अश्वमेध यज्ञ करवाइये। यह कैसे किया जाये, आप ही निर्णय कीजिये।"

"मैं और याज्ञवल्क्य मिलकर तुमसे यज्ञ करवायेंगे। आगामी चैत्र पूर्णिमा के दिन, यज्ञ का अनुष्ठान करो। यज्ञ के अश्व की, सारथियों और ब्राह्मणों की परीक्षा करनी होगी। फिर उस अश्व को देश में छोड़ दो।" व्यास ने कहा।

यज्ञ के अश्व की रक्षा के लिए अर्जुन को नियुक्त किया गया। उसके साथ नकुल के जाने की व्यवस्था की गई। युधिष्ठिर जब यज्ञ के कार्य में व्यस्त हों, तो भीम को शासन का कार्य सौंपा गया। परिवार की देख भाल का भार सहदेव को दिया गया।

अश्व के साथ जाते हुए अर्जुन से युधिष्ठिर ने कहा—"यदि तुम से कोई क्षत्रिय मुकाबला करने आये तो उनसे वैर न करना। उनको यह कहकर आमन्त्रित करना कि हम अश्वमेध यज्ञ कर रहे हैं।"

चैत्र पूर्णिमा के दिन, युधिष्ठिर ने यज्ञ का प्रारम्भ किया। व्यास ने स्वयं यज्ञ के अश्व को छोड़कर, उसके साथ जाते हुए अर्जुन को मन से विदा दी। आशीर्वाद दिया। अर्जुन को देखने के लिए नागरिक झुण्ड बनाकर आये। अर्जुन के साथ याज्ञवल्क्य के कुछ शिष्य, कुछ ब्राह्मण, कुछ क्षत्रिय भी गये।

यज्ञ का अश्व, पहिले उत्तर की ओर गया। रास्ते में त्रिगर्त, यवन, म्लेच्छों ने अर्जुन से युद्ध किया और वे पराजित होकर नष्ट हो गये। अर्जुन ने महाभारत के युद्ध में त्रिगर्तों को मार दिया था, उनकी सन्तति ने अश्व पकड़ लिया, अर्जुन भी युद्ध करने के लिए तैयार हो गये। भाई के कथनानुसार उसने उनसे दोस्ती करने का प्रयत्न किया। परन्तु त्रिगर्तों के राजा सूर्यवर्मा ने अपनी सेना के साथ उसका मुकाबला किया। जब अर्जुन ने सूर्यवर्मा और उसके छोटे भाई को मार दिया, तो औरों ने अपने को उसे समर्पित कर दिया।

घोड़ा आगे बढ़ा, प्राग्ज्योतिषपुर के राजा भगदत्त के लड़के वज्रदत्त ने एक बड़े हाथी पर आकर, अर्जुन का मुकाबला किया। दोनों में तीन दिन युद्ध हुआ। चौथे दिन वज्रदत्त पकड़ा गया। अर्जुन ने उससे कहा—"तुम से मेरा कोई वैर नहीं है। मेरा भाई अश्वमेध यज्ञ कर रहा है। उसके लिए तुम अवश्य आओ।"

Printed by B. NAGI REDDI at the B. N. K. Press Private Ltd., and Published by B. VENUGOPAL REDDI for Sarada Binding Works, 2 & 3, Arcot Road, Madras-26. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'

सर्दी-ज़ुकाम से छुटकारा पाने के लिये

वॉटरबरीज़ कम्पाउन्ड

लाल लेबल लीजिये

सिर्फ़ एक दवाई ही नहीं है बल्कि एक विश्वसनीय टॉनिक भी है।

इसमें ये चार गुण विशेष हैं जिनकी वजह से लोग पीढ़ियों से इसपर अधिक विश्वास करते आरहे हैं।

१. वॉटरबरीज़ कम्पाउन्ड में 'क्रिओसॉट' और 'गॉयकॉल' नामक पदार्थ भी मिले होते हैं जो बलगम का नाश करके फेंफड़ों को साफ़ करने में मदद करते हैं।

२. वॉटरबरीज़ कम्पाउन्ड सर्दी-ज़ुकाम और खाँसी को दूर करके जल्दी आराम पहुँचाता है।

३. वॉटरबरीज़ कम्पाउन्ड दवाई भी है और एक विश्वसनीय टॉनिक भी है। यह शरीर को शक्ति प्रदान करता है।

४. वॉटरबरीज़ कम्पाउन्ड के उपयोग से शरीर के लिये आवश्यक धातुओं की कमी पूरी होती है, भूख ज़्यादा लगती है, खून बढ़ता है और हाज़मा भी ठीक रहता है।

वॉटरबरीज़ कम्पाउन्ड

लाल लेबल

वॉरनर-लॅम्बर्ट फ़ार्मास्युटिकल कम्पनी (सीमित दायित्व सहित यू.एस.ए. में संस्थापित)